

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -19

अंक -2

अप्रैल-II-2019



(पाक्षिक)

माउण्ट आबू

Rs. -10.00

शिव जयंती पर होता परमात्म आगमन



कार्यक्रम के दौरान शहर के गणमान्य अतिथियों के साथ उपस्थित हैं राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी रजनी दीदी।

नागपुर-वसंत नगर। वर्तमान परिदृश्य में चारों ओर मूल्यों की गिरावट दिखाई देती है। दूसरी ओर प्राकृतिक आपदायें व गृहयुद्ध जैसे हालात चारों ओर दिखाई पड़ते हैं। गीता में बताई हुई बात यदा यदा हि

ले जाना होगा। उक्त उद्गार राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी ने शिवरात्रि महोत्सव के अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि ऐसे वातावरण में परमात्मा द्वारा दी हुई शिक्षाओं को अपने जीवन में

वसंत नगर में मनाये गये महोत्सव में सुधाकर देशमुख, राज्य मंत्री महाराष्ट्र, राजमाने जी, डेप्युटी पुलिस कमिश्नर, नागपुर, अतल पांडे, प्रेसिडेन्ट, विदर्भ इंडस्ट्रियल एसोसिएशन, इंटरचेंज जयपुरिया, चैयरमैन, उजास इलेक्ट्रीकल्स प्रा. लि., डॉ. सतीश कदम, लीडिंग एनेस्थेटिक प्रैक्टिसर, आनंद कालरा, प्रेसिडेन्ट, रोटरी क्लब आदि उपस्थित थे। ब्र.कु. मनीषा दीदी, सह संचालिका, ब्रह्माकुमारीज् नागपुर ने सबको राजयोग मेडिटेशन द्वारा गहन शांति की अनुभूति कराई। ब्र.कु. नीतू दीदी, संचालिका टाकली सेवाकेन्द्र ने मंच संचालन किया तथा ब्र.कु. प्रेमप्रकाश ने सबका आभार प्रदर्शन किया।

विश्व शांति सरोवर जामठा में लहराया शिव ध्वज

महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में विश्व शांति सरोवर जामठा में उपस्थित रहे मनीष राठोड, असिस्टेंट जनरल मैनेजर, एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया नागपुर, संदीप गायकवाड़, प्रिन्सीपल, मोहनराव गायकवाड़ कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, पराग निमीशे, प्रिन्सीपल, साइन्स कॉलेज सावनेर तथा अन्य गणमान्य लोग।

धर्मस्य... की उक्ति समय के साथ सटीक बैठती है। सोचने की बात है कि परमात्मा के आने का यह समय है, इसे पहचानना होगा। और उनके बताये हुए रास्ते पर चलकर अपने जीवन को श्रेष्ठता की ओर

अपनाना होगा। इसी से ही मन में अशांति, तनाव और दुःख से मुक्ति मिलेगी। उन्होंने कहा कि हमें राजयोग मेडिटेशन के द्वारा पुनः अपनी भारतीय संस्कृति के मूल्यों को प्रस्थापित करना होगा।

सात दिवसीय मेले में समझा महाशिवरात्रि का मर्म



- यहाँ के भाई बहनों की पवित्रता और शांति आकर्षित करती है - रंजना साहू
- ब्रह्माकुमारीज् ने सबको एक सूत्र में बांधा है - अर्चना चौबे
- यहाँ से मार्गदर्शन, प्रेरणा और शक्ति मिलती है - गुरुमुख सिंह होरा
- बहनों की सेवा भावना प्रशंसनीय - विधायक लेखराम
- हर वर्ग का आध्यात्मिक और चारित्रिक विकास करती ये संस्था - राजीव लुंकट
- यहाँ सभी धर्मों के लिए एक ही मंच, ये सराहनीय है - मो. असलम भाटी

मेले का मुख्य आकर्षण

बारह ज्योतिर्लिंग, स्वर्ग दर्शन, सर्व आत्माओं के पिता की मनमोहक झाँकी तथा कुम्भकरण को जगाते ब्रह्माकुमारी बहनों की चलित झाँकी।

धमतरी-छ.ग.। आत्मानुभूति तपोवन में श्रीमती रंजना साहू, विधायक, श्रीमती अर्चना चौबे, महापौर, नगर पालिका निगम, गुरुमुख सिंह होरा, पूर्व विधायक धमतरी, हर्षद मेहता, पूर्व विधायक, लेखराम साहू, पूर्व विधायक कुरूद, राजीव लुंकट, समाज सेवी धमतरी, ज्ञानी विनोद जी गुरु सिंह सभा धमतरी, मो. असलम भाटी, समाज सेवी तथा ब्र.कु. सरिता, संचालिका दिव्यधाम सेवाकेन्द्र धमतरी की उपस्थिति में महाशिवरात्रि के अवसर पर 'सात दिवसीय आध्यात्मिक मेला' का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर ब्र.कु. सरिता ने महाशिवरात्रि का

आध्यात्मिक अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि ज्योतिर्लिंग परमात्मा शिव को हर धर्म में अलग-अलग नाम से पुकारा जाता है और पूजा आराधना की जाती है। उन्होंने कहा कि शिव के साथ रात्रि शब्द कलियुग की तमोप्रधानता, अज्ञानता का प्रतीक है। धर्मग्लानि के समय परमात्मा स्वयं इस धरा पर आकर ज्ञान की ज्योत जगाकर मानव जीवन से अज्ञान अंधकार को समाप्त करते हैं। भक्तगण शिवलिंग के ऊपर अक, धतुरा जैसे जहरीले फल अर्पित करते हैं। इसका रहस्य है कि हमें अपने जीवन से विकारों रूपी जहर को परमात्मा पर अर्पण करने से ही परमात्म वरदान मिलता है।

अध्यात्म बिना मनुष्य जीवन में शांति नहीं

- » यहाँ के आदर्शों को जीवन में अपनायें - संगीता बोव्हाड़े
- » यह सभी को शांति का पैगाम देने वाली संस्था है - कमाण्डेंट सिद्धू
- » मन को मार्गदर्शन व सही दिशा देने वाली यह संस्था - डी.एस. यादव
- » शांति का अविरत स्रोत परमात्मा शिव - जिला अध्यक्ष दशरथ भगत



कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए अण्णी शेट्टी, कमाण्डेंट बी.एस. सिद्धू, नगर सेविका संगीता बोव्हाड़े तथा ब्र.कु. शीला।

नवी मुम्बई। घनसोली सेवाकेन्द्र पर महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में अण्णी शेट्टी, मुकाम्बिका मंदिर ट्रस्टी ने कहा मनुष्य का जीवन तो भगवान की देन है। वह त्यागमय होना चाहिए। दूसरे का सुख देख फिर अपना सुख देखना चाहिए। राजयोगिनी ब्र.कु. शीला ने कहा कि परमात्मा इस धरा पर आकर अज्ञान अंधकार का विनाश और सत् धर्म की स्थापना करते हैं। परमात्मा ने आकर सबको घर-गृहस्थ में रहकर कमल फूल समान बनने की प्रेरणा दी। संगीता बोव्हाड़े, नगर सेविका ने कहा कि इन बहनों का कार्य बहुत महान है। हमें भी इनके समान आदर्श जीवन जीना चाहिए। जिससे हमारे बच्चों में भी वही संस्कार दिखाई दे। भापकर समाज सेवक ने कहा कि आज की तरुण पीढ़ी को यहाँ पर आकर यहाँ की शिक्षाओं का अनुसरण करना चाहिए, जिससे ही उनका सही विकास होगा। बी.एस. सिद्धू, कमाण्डेंट सीआरपीएफ ने कहा कि उनकी ट्रेनिंग भी माउंट आबू जहाँ ब्रह्माकुमारीज् का मुख्यालय है वहाँ हुई थी। जिससे

कई बार वह उनके सम्पर्क में आये और उनकी सराहना करते हुए कहा, यह संस्था, सभी को शांति का पैगाम देने वाली संस्था है। डी.एस.यादव, याक चैयरमैन ने कहा कि यदि हमें अपना जीवन सुधारना है, भविष्य को बदलना है तो मन का मार्गदर्शन करो और सही दिशा दो। यही संदेश ब्रह्माकुमारीज् देती है। दशरथ भगत, जिला अध्यक्ष ने कहा कि सबसे

शिव जयंती पर नवी मुम्बई स्थित सेवाकेन्द्र घनसोली, सी.बी.डी. बेलापूर, सानपाड़ा में शिव संदेश देने हेतु रैली का भव्य आयोजन किया गया।

बड़ा सत्य यह है कि अध्यात्म बिना मनुष्य को शांति मिल नहीं सकती और उस शांति का अविरत स्रोत

वह परमात्मा शिव है। शांति में रहने के लिए और एकाग्रता के अभ्यास के लिए यह राजयोग अति आवश्यक है जो कि एक उपासना है, तपस्या है। जब तक यह समाज में नहीं है तब तक मनुष्य दर-बदर भटकता ही रहता है। ब्र.कु. मीरा ने सभी को राजयोग का अभ्यास कराया। कार्यक्रम के दौरान ब्रह्माकुमारी बहनों ने विद्यालय के समाज के प्रति जो कार्य हैं, उससे सबको अवगत कराया। साथ ही साथ ब्र.कु. शुभांगी, सानपाड़ा ने परमात्म परिचय दिया। सभी ने कार्यक्रम का भरपूर आनंद लिया।

श्रेष्ठ कर्म द्वारा बरसती ईश्वरीय कृपा

मोतिहारी-बिहार।

भारत विकास परिषद द्वारा आयोजित 'तृतीय पूर्वी क्षेत्रीय महिला सम्मेलन' को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. रानी बहन ने एक मर्मस्पर्शी कहानी के द्वारा बताया कि जैसे द्रौपदी ने यमुना तट पर एक साधु की लाज बचाने हेतु अपने वस्त्र का एक टुकड़ा उसे दिया, उसकी बदौलत जब भरी सभा में उसका चीर हरण हो रहा था, तब परमात्मा ने उसे हजारों गज वस्त्र देकर उसकी लाज बजाई। उन्होंने इस कहानी का मर्म बताते



कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. रानी। मंचासीन हैं अतिथिगण।

हुए कहा कि इसी तरह यदि इसान श्रेष्ठ कर्म करके किसी की मदद करता है, तो समय आने पर परमात्मा उसका फल सूद सहित देता है और उसकी मदद

करता है। उन्होंने कहा कि महिला यदि अपनी शक्तियों और अपनी काबिलियत को सही मायने में समझ जाये तो सारे विश्व को सही दिशा देने में सक्षम है।

तय कर लें तो ज़िन्दगी बदल सकती है

भरोसेमंद लोग सबकी पसंद होते हैं। दूसरों की निगाहों में भरोसा बनाने के लिए पहले खुद पर भरोसा बनाना जरूरी है। यह अवसर संकल्प लेने और उनके पालन करने से मिल सकता है।

संकल्प होता क्या है? संकल्प, जैसा कि नाम से जाहिर है, एक वादा है खुद से। अपनी ज़िन्दगी के किसी एक चुने हुए पक्ष को, एक साल में बेहतर करने का वादा। एक महीने तक लगातार किसी काम को करने से आदत पड़ जाती है, लेकिन इस आदत को बराबर याद रखते हुए निभाना भी है। जो भी हमने खुद से वादा किया है, जिससे हम ऊपर उठना चाहते हैं, उसपर हमें ध्यान रखना है और निरंतरता बनाये रखनी होगी।

संकल्प टूटता क्यों है? दूसरों से किये वायदे को समाज, परिवार, या यूँ कहें कि दूसरों के दबाव में आकर निभा लेते हैं, लेकिन खुद से किये वायदे को जल्द ही छोड़ देते हैं। अपने प्रति लापरवाही का वह पुख्ता प्रमाण है। हम कई बार खुद से वायदे करते हैं और समय आने पर उसे बरकरार नहीं रख पाते। अर्थात् उसे छोड़ देते हैं। दूसरी बात, शायद ज़्यादातर लोग कम्फर्ट जोन में रहना चाहते हैं इसीलिए वो अपना संकल्प नहीं निभा पाते हैं। एक वजह संकल्प में नतीजे की अस्पष्टता भी होती है, अगर ये संकल्प करूंगा तो उसका परिणाम क्या रहेगा, इस तरह की उलझन के भँवर में फँसकर नतीजे तक नहीं पहुंच पाते।



- डॉ. कु. गंगाधर

संकल्प से क्या होता है? संकल्प से बदलाव आता है जीवन में। बहुत बड़ा बदलाव, क्योंकि इससे जीवन का एक पक्ष ही नहीं सुधरता, बल्कि वायदे निभाने का जज़्बा भी पैदा होता है। जो खुद के लिए विश्वसनीय हो, उस पर दूसरे भी भरोसा कर सकते हैं। और तीसरी सबसे बड़ी बात, बदलाव करके बेहतर लाने पर भरोसा बन जाता है। इसमें कोई दो-राय नहीं कि संकल्प लेना और निभाना व्यक्तित्व निखार में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संकल्प लेने का अर्थ उसे निभाना ही है। निभाना यानी जीवन को नित नई राह पर ले चलना। जिसे हम कहते हैं 'ग्रोथ माइंड सेट' यानी प्रगति की मानसिकता। इससे हासिल क्या होगा, आप जानते हैं? उसको हम आगे बतायेंगे।

एक प्रयोग के बारे में बात करते हैं। दो लोगों के समूह को एक काम करने को दिया गया। पूरा होने पर मनोवैज्ञानिकों ने एक समूह के प्रयास की तारीफ की और दूसरे की बुद्धिमानी की। फिर दोनों को आसान और मुश्किल कामों के चन्द विकल्प दिये गये। आपको हैरानी होगी उनके चुनाव पर। आपको लगता है कि बुद्धिमानों के लिए सराहे गये लोगों ने मुश्किल काम चुने होंगे, तो आप गलत हैं। उन्होंने आसानियत चुनी। जिनके प्रयास सराहनीय थे, उन्होंने मुश्किल काम चुना। ऐसा क्यों? क्योंकि उनको कोशिश करना आता है यानी उन्हें विफलता से डर नहीं लगता। वे जानते हैं कि हर प्रयास सीखने का अवसर देता है। वहीं बुद्धिमानों को लगता है कि उन्हें अपने इसी गुण को बनाए रखने के लिए आसान रास्ता चुनना चाहिए ताकि कोई उनसे इस लेबल को छीन ना सके। प्रयास करने वालों की मानसिकता प्रगति की थी, आप समझ ही गये होंगे।

अब जानिये कि इससे मिलता क्या है? किसी ने खूब कहा है। आप जो हैं, वो अपनी परिस्थितियों की वजह से नहीं, अपने लिए फैसलों की वजह से हैं। अगर आप लगातार सीखने की, प्रयास करने की, चलते रहने की मानसिकता रखेंगे तो - 1. आपका दिन या सिर्फ आपका काम ही नहीं, आपके जीवन की डोर आपके नियंत्रण में होगी। 2. इसका मतलब होगा कि आप अपने फैसले खुद लेते हैं। 3. जिसका मतलब होगा कि आप ऐसे करने में सक्षम हैं और यह जानते भी हैं। 4. यानी बिल्कुल साफ है कि आप अपने फैसलों की जिम्मेदारी उठा सकते हैं। हम सब कई बार आसान रास्ता चुनते हैं और ज़िन्दगी की कठिनाइयों के लिए कभी बुरे हालात में बीते बचपन, कभी जीवन साथी को, कभी पैसों की कमी, तो कभी ईश्वर की नाईसाफी को इल्जाम देते हैं। यानी एक जड़ सोच लेकर चलते रहते हैं जैसा कि किसी ने कहा है ऐसा करते हुए हम अपनी परिस्थितियों के गुलाम बनकर रह जाते हैं। अगर बदलने का फैसला करें, तो हालात भी बदलेंगे और आप भी। तो संकल्प जरूर लीजिए। यह प्रगतिकारक सोच को बढ़ावा देगा।

दिमाग को भी सिखाइये। शरीर का हर कार्य दिमाग में मौजूद न्यूरोन्स के सम्प्रेषण के कारण ही होता है। इसके हर हिस्से के जिम्मे अपने अपने काम होते हैं। तो संकल्प किसके हिस्से में आता है? प्रेफरेंशियल कॉन्टेक्ट (पीएफसी) ये फोकस और इच्छा शक्ति का केन्द्र है। अर्थात् वे खूबियाँ, जो जीवन बदलने में मददगार होती हैं। लेकिन शोध ने साबित किया है कि पीएफसी को बड़े कामों का लक्ष्य समझ में नहीं आता। तब क्या करें? करना ये है कि अपने संकल्प को छोटे प्रयास में तब्दील करें और बड़े लक्ष्यों की तरफ छोटे कदम उठाते जायें। इस तरह आप जो संकल्प करते हैं, उसमें खुद के प्रति ईमानदारी और प्रामाणिकता से प्रयास करने पर ज़िन्दगी में बदलाव आता है। जीवन को बदलना या संवारना चाहते हैं, तो किसी और की प्रतिक्षा क्यों करना! संकल्प कीजिए, उन्हें पूरा कीजिए और निरन्तर बेहतर होती ज़िन्दगी का सुकून पाइए। ठीक है ना! देर किस बात की! अपने संकल्प, अपने सपने, उसे ही तो पूरा करना है।

परमात्म पढ़ाई से ही श्रेष्ठ तकदीर बनती है

कल्याणकारी परमात्मा कहते हैं, मैं किसी को सज़ा नहीं देता हूँ। जब परमात्मा किसी के गलत कर्म के बीच नहीं आते, धर्मराज पर छोड़ देते हैं तो हमें भी किसी के गलत कर्म के बीच में नहीं आना है। हमें दूसरों के किए हुए पाप को बताने वाला, दिखाने वाला और सोचने वाला नहीं बनना है। समझो हमारे अंग-संग रहने वाले पाप करते हैं तो उनके पाप को याद न करें बल्कि यह दुआ करें कि ये पाप कर्म करने से बच जाए, इसके पाप भी क्षमा हो जाएं। परमात्म पढ़ाई की वैल्यू अकथनीय है, ये सिर्फ थ्योरी नहीं है बल्कि प्रैक्टिकल है इसलिए ज्ञान का मंथन कर उसका सार बुद्धि में रखना है। इसेन्स में एक सेकंड में

जीवनमुक्ति प्राप्त हो जाती है। जब तक एक सेकंड में हम खुद मुक्त नहीं होंगे, तब तक हम विदेही, देह से न्यारे और ट्रस्टी, सबसे न्यारे होकर रह नहीं सकते हैं। विदेही बनने की युक्ति है कि सदा बाप के तीन

जायेंगे। किसी के प्रभाव, अभाव, दबाव से स्वयं को फ्री रखना है। किसी के अधीन होकर कोई संकल्प, बोल, कर्म करेंगे तो परमात्मा से प्राप्त वरदान यूज़ नहीं होंगे। उनके वरदान मेरे पास ही रहें इसका

परमात्मा कहते हैं सागर से अवल सीखो। एक ही लहर की उछाल से किचड़ा किनारे फेंक देता है। कोई कुछ भी बातों का किचड़ा फेंके आप ज्ञान की एक लहर से उसको ऐसा उड़ाओ जो अंदर से कभी मैले न हो पाएँ, इस तरह से हम मुक्त रह सकेंगे।

स्वरूप...साकार, अव्यक्त और निराकार इमर्ज रखो। अनुभव करो कि कैसे साकार में आकर भी वे अव्यक्त निराकार हैं और निराकार अव्यक्त रूप में ऊपर से साकार रूप में आकर हम बच्चों को अपना बनाते हैं। तीनों रूप को इमर्ज करो तो विदेही, देह से न्यारे सहज हो

ध्यान जरूर रखना है। किसी के प्रभाव दबाव में आकर हाँ जी कर कोई कर्म नहीं करना है। परमात्मा कहते हैं सागर से अक्ल सीखो। एक ही लहर की उछाल से किचड़ा किनारे फेंक देता है। कोई कुछ भी बातों का किचड़ा फेंके, आप ज्ञान की एक लहर से उसको ऐसा



दादी चानको, मुख्य प्रशासिका

उड़ाओ जो अंदर से कभी मैले न हो पाएँ, ऐसे फ्री रहेंगे। जो किचड़ा फेंकता है, प्रभाव डालने की कोशिश करता है तो उसे भी अंदर, गुप्त, परमात्मा की याद से फ्री करने में मदद करें लेकिन सत्यता को कभी नहीं छोड़ना, नहीं तो प्रभाव डालने वाला अधीन करता ही रहेगा। परमात्म पढ़ाई में श्रीमत पर प्रैक्टिकल में चलकर मास्टर डिग्री लेनी है इसलिए स्वयं पर सूक्ष्म अटेंशन चाहिए।



दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

जहाँ सच्चाई है वहाँ सब कुछ है, जो बाबा कहते हैं वो ही करें

जो बाबा कहते हैं वही बोलो। सबकुछ जानकर, स्पष्ट करके अपने को भी स्पष्ट करो। चालाकी नहीं होनी चाहिए। कई ऐसे होते हैं लेकिन हमें ऐसा नहीं बनना है, जहाँ सच्चाई है वहाँ सबकुछ है।

हम सब तो आपस में एक दो को अच्छी तरह जानते हैं। बाबा के बच्चे अलग-अलग रहते भी ऐसे ही लगता है जैसे सब एक साथ रहते हैं। हम सभी संगठन में सदा ही एक दो को दृष्टि देते, मिलते, रूहरिहान करते आगे बढ़ते हैं और बढ़ते रहेंगे। सब अच्छे हैं, सबको बहुत खुशी है। एक दो को मिलते हैं, रूहरिहान करते हैं, बाबा की बातें वर्णन करते हैं, हमारे लिए तो संसार ही यही है। हम सब एक दो के पुराने साथी हैं, एक दो को देख कितनी खुशी होती है, ये मेरा भाई, यह मेरी बहन है। भल सेवा के लिए अलग-अलग रहते हैं, परन्तु मन से तो मिलते ही रहते हैं। जब मेरा भाई, मेरी बहन कहते हैं तो मेरा बाबा याद आता है। शक्तिशाली तो सब हैं ही, कभी शक्ति कम होती है क्या! जिस समय शक्ति कम होती है तो पुरुषार्थी हैं। (दादी जी आपमें ऐसा क्या है जो आप कहीं भी जाते हैं तो बहार आ जाती है?) हमारे द्वारा सब बाबा को ही देख रहे हैं, हमें अकेले नहीं देखते हैं। बाबा हमारे साथ है। बाबा शब्द कहते हैं और बाबा में समा जाते हैं। ऐसा बाबा फिर कहाँ मिलेगा! टीचर्स बहनों के साथ :- हमें अब ज़्यादा विस्तार में नहीं जाना है। बाबा की याद में सार में

रहना है। इतना तो ज्ञान है कि हम सब देवता बनने वाले हैं, अभी तक बना तो कोई भी नहीं है। अभी सब पुरुषार्थी हैं। बाबा रोज़ मुरली में ध्यान खिंचवाते हैं। यह नहीं सोचो मैं सब सुन चुकी, मैं बन चुकी, नहीं। बन रहे हैं। बाबा जब तक हैं हमारा यह सुनना और सुनाना चलता ही रहेगा। जितना सुनें और धारणा करें उतना ही अच्छा है। आपस में रूहरिहान भले करो लेकिन जो धारणायुक्त है वही बोलो। वही अच्छा है। मूल बात है खुश रहो। छोटी-छोटी बातों में अपना मूड ऑफ नहीं करो, क्योंकि हमको बाबा के नज़दीक आना है। अभी भी नज़दीक रहते हैं, तो भविष्य में दूर थोड़े ही रहेंगे। तो नज़दीक आने के लिए जरूरी है जो बाबा कहते हैं वही बोलो। सबकुछ जानकर, स्पष्ट करके अपने को भी स्पष्ट करो। चालाकी नहीं होनी चाहिए। कई ऐसे होते हैं लेकिन हमें ऐसा नहीं बनना है, जहाँ सच्चाई है वहाँ सबकुछ है। जो भी है वह सच्चे दिल से अपने व दूसरे में धारणा देखें। तो कुछ भी हो, खुशी नहीं गंवाना। बस, बाबा और मैं, और बातों में नहीं जाओ। बाबा की मुरली ऐसी है जो हम उसको मनन करते-करते सारा दिन ही बिता दें, यह विशेषता चाहिए।

समान रहना - ज्ञानी तू आत्मा का मुख्य गुण है

बाबा हम बच्चों को यह बहुत बड़ा पाठ सिखाते हैं कि हे बच्चे, इस ज्ञान के पथ पर चलेंगे तो सहन करने की शक्ति धारण करनी पड़ेगी। सहनशील बनने की थोड़ी तकलीफ लेनी पड़ेगी। यह सहनशीलता का गुण बहुत बड़ी शक्ति है, यह सर्व गुणों में महान गुण है। यह बाबा के बोल सुन सब प्रैक्टिकल चार्ट देखें कि मेरे में सहनशीलता का गुण व शक्ति है?

बाबा ने कहा बच्चे दुःख-सुख, स्तुति-निंदा, मान-अपमान सबमें समान रहने की, सहनशील होने की शक्ति चाहिए। तो यह शक्ति चाहिए या मुझ आत्मा का अथवा इस ज्ञान का पहला-पहला गुण ही यह है?

आ जाती है। जैसे बाल से युवा, युवा से वृद्ध होते तो कभी यह नहीं कहते कि ओ प्रकृति तूने बाल से युवा व युवा से बूढ़ा क्यों बनाया? परन्तु जानते हैं कि यह प्रकृति का नियम है। चार ऋतुएं होना, यह भी प्रकृति का नियम है। जब हम जानते हैं कि यह नियम है तो हम क्यों कहेँ ओ प्रकृति



दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

ज्ञानी तू आत्मा का गुण है - समान रहना। अगर ज्ञानी तू आत्मा में यह गुण नहीं तो वह प्रिय नहीं। जब हम अपने को ज्ञानी तू आत्मा कहते माना हमारे अन्दर ड्रामा की सारी नॉलेज है।

तुम हमें ठण्डी में व गर्मी में दुःख क्यों देती! हम जान गये अभी की प्रकृति है ही तमोप्रधान। फिर जब कहते क्या करें यह पारिवारिक परिस्थितियाँ आती हैं। वह तो आयेगी ही। मैं उससे दुःखी क्यों हूँ! जैसे प्रकृति का दुःख सुख सहन करते, वैसे यह परिवार का भी तो हिसाब-किताब है। मैं उसमें क्यों लडूँ! हमें उसमें अपनी स्थिति

अप-डाउन नहीं करनी है। कभी-कभी सोचते मुझे तो सबसे मान मिलना चाहिए। ये मुझे मान नहीं देता इसलिए गुस्सा आता। लेकिन जब प्रकृति दुःख देती तो गुस्सा क्यों नहीं आता। जब मेरा कोई अपमान करता तो मैं रंज होती लेकिन मैं सोचूँ कि मैंने उसे कितना मान दिया है। एक है देना, एक है लेना। जब अपमान पर गुस्सा आता माना मैं मान की भूखी, प्यासी हूँ। मैं दाता बनूँ या लेवता बनूँ? मुझे मान देना है या लेना है? मान मांगना अर्थात् आत्माओं से वर मांगना। बाबा कहते मांगने से मरना भला... मैं दाता की बच्ची दाता हूँ तो लेवता क्यों बनते! यह सवाल हरेक अपने से पूछें। कई कहते हैं क्या करूँ, गुस्से में हाथ चल गया। अरे चल गया या तुमने चलाया? कहते हैं न चाहते भी गाली निकल गई। अरे मुख किसका गंदा हुआ! जिसने गाली दी उसका मुख बासी हुआ। तुम उनसे मुख मोड़ लो। तुम उनके साथ गंदा क्यों बनते हो! दिलाराम बाप के दिलाराम बच्चे बनो।



दिल्ली। विश्व विख्यात जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी को 'नारी शक्ति अवॉर्ड' द्वारा सम्मानित करते हुए भारत के राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ कोविंद जी।



दिल्ली-समयपुर। त्रिमूर्ति शिवजयंती महोत्सव पर शोभा यात्रा के उद्घाटन पश्चात् अजीशा यादव, विधानसभा विधायक, बदली क्षेत्र को ईश्वरीय सौगात व ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. कुसुम तथा ब्र.कु. रजनी।



नेपाल-काठमांडू। 83वीं महाशिवरात्रि पर्व के उपलक्ष्य में शांति, समृद्धि और स्वर्णिम युग के लिए वैश्विक जागृति पद यात्रा के समापन कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए भौतिक पूर्वाधार तथा यातायात मंत्री रघुबीर महासेठ, ब्र.कु. राज, ब्र.कु. किरण, ब्र.कु. बाबामैया तथा अन्य।



सफल जीवन के अनमोल सूत्र

जब आप पैदा हुए थे, तो पूरी दुनिया ने जश्न मनाया था। ऐसे ही आप अपना जीवन ऐसे जियो कि आपकी जाने के बाद भी आप सबके दिलों में जीवंत होकर रहें।

कठिनाइयाँ

जब तक आप अपनी समस्याओं एवं कठिनाइयों की वजह दूसरों को मानते हो, तब तक आप अपनी समस्याओं और कठिनाइयों को मिटा नहीं सकते। क्योंकि अपनी समस्याओं और कठिनाइयों की वजह आप स्वयं हैं।

असंभव

इस दुनिया में असंभव कुछ भी नहीं है। हम वो सबकुछ कर सकते हैं, जो हम सोच सकते हैं और हम वो आज सोच सकते हैं जो आज तक हमने नहीं सोचा।

हार न मानना

बीच रास्ते से लौटने का कोई फायदा नहीं क्योंकि लौटने पर आपको उतनी ही दूरी तय करनी पड़ेगी जितनी दूरी तय करने पर आप लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। इसलिए लक्ष्य की ओर बढ़ें।

अर्थ : हार व जीत का

सफलता हमारा परिचय दुनिया को करवाती है और असफलता हमें दुनिया का सही परिचय करवाती है।

सच्चा आत्मविश्वास

अगर किसी चीज को आप सच्चे दिल से चाहो तो पूरी कायनात उसे आपसे मिलाने में लग जाती है।

सच्ची महानता

सच्ची महानता कभी न गिरने में नहीं, बल्कि हर बार गिरकर फिर उठ जाने में है।

गलतियाँ

अगर आप समय पर अपनी गलतियों को

स्वीकार नहीं करते हैं तो आप एक और गलती कर बैठते हैं। आप अपनी गलतियों से तभी सीख सकते हैं, जब आप अपनी गलतियों को स्वीकार करें।

चिन्ता

अगर आप उन बातों व परिस्थितियों की वजह से चिंतित हो जाते हो जो आपके नियंत्रण में नहीं हैं। तो इसका परिणाम समय की बर्बादी एवं भविष्य में पछतावा है।

शक्ति

ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियाँ पहले से ही हमारी हैं। वो हम हैं जो अपनी आँखों पर हाथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अंधकार है।

मेहनत

हम चाहें तो अपने आत्मविश्वास और मेहनत के बल पर अपना भाग्य खुद लिख सकते हैं और अगर आपको अपना भाग्य लिखना ही नहीं आता तो परिस्थितियाँ और समय आपका भाग्य लिख ही देंगे।

सपने

सच कहें तो सपने वो नहीं हैं जो हम नींद में देखते हैं, सपने तो वो हैं जो हमें नींद ही न आने दें।

समय

आप यह नहीं कह सकते कि आपके पास समय नहीं है, क्योंकि आपको भी दिन में उतना ही समय मिलता है जितना समय महान एवं सफल लोगों को मिलता है। समय सभी को एक समान ही मिलता है।

विश्वास

विश्वास में वो शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में प्रकाश लाया जा सकता है। विश्वास पत्थर को भगवान बना सकता है और विश्वास भगवान के बनाये हुए इंसान को भी पत्थर दिल बना सकता है। विश्वास की नींव पर टिके हैं सारे रिश्ते।

सफलता

दूर से हमें आगे के सभी रास्ते बंद नज़र आते हैं। क्योंकि सफलता के रास्ते हमारे लिए तभी खुलते हैं जब हम उसके बिल्कुल ही करीब पहुँच जाते हैं।

सोच

बारिश के दौरान सारे पक्षी आश्रय की तलाश करते हैं, लेकिन बाज बादलों के ऊपर उड़कर बारिश को अवाँड कर देते हैं। समस्याएँ कॉमन हैं, लेकिन आपका नज़रिया इनमें अंतर पैदा कर देता है। इसलिए अपने सोचने के नज़रिये को चेंज करें।

प्रसन्नता

यह पहले से निर्मित कोई चीज नहीं है। ये आपके कर्मों से आती है। आपके कर्म ही निर्मित बनते हैं।

निमित्त भाव

आप सिर्फ निमित्त मात्र हैं इस संसार में। यह संसार एक रंगमंच है। सभी मनुष्य आत्मायें अपना अपना पार्ट प्ले कर रही हैं। जो आत्मा अपना पार्ट निमित्त भाव से प्ले कर रही है, वो आनंद में है।

याद रखें : चाहे अरबों-खरबों इकट्ठा कर लो, लेकिन जीवन में सच्चा आनंद और शांति तो सिर्फ व सिर्फ ईश्वरीय ध्यान व परमात्म याद में ही है। ये और कहीं नहीं मिलेगी।



अजमेर-राज। शिवरात्रि के अवसर पर 'आध्यात्मिक कलाश यात्रा' का शिव ध्वज लहराकर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. शांता, ब्र.कु. रूपा, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. अंकिता तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।



आवला-बरेली(उ.प्र.)। 83वीं महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित शोभायात्रा में आमंत्रित चैयरमैन संजीव सक्सेना का स्वागत करने के पश्चात् प्रसाद देते हुए ब्र.कु. नीता। साथ हैं साहित्यकार गिरिराज नंदन गुप्ता तथा ब्र.कु. नेहा।



चण्डीगढ़। 83वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती महोत्सव में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अमीर चंद। कार्यक्रम में उपस्थित हैं पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट जस्टिस दया चौधरी, श्रीमती मनोज परिदा, आई.ए.एस. सौरभ मिश्रा तथा ब्र.कु. उत्तरा।



धुरी-पंजाब। त्रिमूर्ति शिवजयंती के अवसर पर झंडारोहण करने के पश्चात् सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. बृज बहन। साथ हैं ब्र.कु. मूर्ति, ब्र.कु. सुनीता, नगर काउंसिल प्रेसिडेंट संदीप तायल, व्यापार मंडल के अध्यक्ष विकास जैन, पूर्व व्यापार मंडल अध्यक्ष विजय गुप्ता तथा अन्य।



फाज़िलका-पंजाब। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण करने के पश्चात् सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. प्रिया। साथ हैं इंस्पेक्टर प्रेमनाथ, उद्योगपति महावीर मोदी, ज्योति बी.एड. कॉलेज की चैयरमैन हैप्पी ठकराल, वरिष्ठ रिपोर्टर राकेश नागपाल तथा अन्य।



दिल्ली-हरिनगर। सीआरपीएफ के शहीद जवानों के लिए मोमबत्ती जलाकर श्रद्धांजली अर्पित करते हुए ब्र.कु. शुक्ला, डी.एस.पी. सतीश कुमार, सीआरपीएफ मेजर भवानी, लेफ्टिनेंट कर्नल विवेक, नरेन्द्र चावला, मेयर एस.डी.एम.सी. तथा जनरल इंस्पेक्टर राज कुमार, दिल्ली तिहाड़ जेल हेडक्वार्टर।



बचपन में एक बार हम मम्मी पापा के साथ घूमने गये मार्केट में। तो मैंने एक चीज की तरफ इशारा करके कहा कि मुझे ये चाहिए। उन्होंने कहा कि घर में बहुत सारे पड़े हैं आपको नहीं चाहिए। मैंने कहा मुझे ये चाहिए तो बोले जरूरत नहीं है तुमको। तो हमने मार्केट में खड़े होकर थोड़ा जोर से रो दिया और मम्मी पापा ने उसी टाइम चीज लेकर दे दी। वो एक दिन था जब इस बात की प्रोग्रामिंग हो गई। प्यार से बोला तो नहीं दिया, दूसरी बार आराम से बोला नहीं दिया, जोर से बोला फटाफट दे दिया। अगली बार तो पहली बार में ही जोर से बोल देना, काम हो जाएगा मेरा। आज सारी दुनिया इसी थॉट के साथ काम कर रही है। काम हो जाते हैं हमारे, लेकिन साथ साथ और क्या हो जाता है? साथ साथ मेरी बैटरी डाउन हो जाती है। और जब मेरी बैटरी डाउन होती है ना तो मेरी दुनिया पर असर पड़ जाता है उसका। हीलर्स हैं हम। हीलर्स की एनर्जी फील्ड कैसी होनी चाहिए? जब हम देवी देवताओं के मन्दिर में जाते हैं ना, उनका चित्र देखते हैं तो उनके पीछे एक हीलर है व्हाइट कलर का सर्कल। क्या व्हाइट कलर का सर्कल सिर्फ देवी देवताओं के पीछे

जीवन में कौन सी एनर्जी का कलर भर रहे हैं

हम रोज उठते हैं और जैसे शरीर को पुष्ट करते हैं वैसे ही अपने थॉट प्रोसेस को भी पुष्ट करना चाहिए। पर ध्यान ये रखें कि हम किस टाइप की एनर्जी मन में क्रिएट करते हैं। क्योंकि जो आप क्रिएट करते हैं वैसे ही एनर्जी का सर्कल आपके चारों ओर बनता रहता है। यह आप पर निर्भर है कि आप कौन सी एनर्जी का कलर चाहते हैं, व्हाइट कलर या फिर कोई और...

होता है या सबके पीछे होता है? अब अपने पीछे चेक करो कि जो मेरे पीछे सर्कल है वो कौन से कलर का है? क्योंकि हर एक के पीछे सर्कल है। हमारे यहाँ ऐसे उपकरण भी है जिससे हमारा ऑरा किस कलर का है पता चलता है। क्या आप देखना चाहते हैं कि आपका कलर कैसा है? देखो, दो तरह से जीवन जीना है। एक है अब जो कलर है उसको देखें। दूसरा कहे आज नहीं है तो कल तक व्हाइट हो जायेगा क्या बड़ी बात है। तो क्या करना है, कलर देखना है या कलर चेंज करना है? कलर चेंज करना है। जैसे आप शरीर का स्कैन करते हैं, इसी तरह एनर्जी के शरीर का भी एक स्कैन होता है। उस स्कैन में ये जो एनर्जी है व्हाइट, क्रीम, येल्लो, डार्क



डॉ. कु. शिवानी,
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

ग्रे। क्रियेटिड ऑन द बेसिस ऑफ माई एवरी थॉट, फीलिंग, बिलिफ सिस्टम एनर्जी। जिसका सर्कल डार्क होगा वो दूसरों को भी क्या रेडिएट करेगा? डार्क। और इसीलिए कई बार आप देखना किसी से मिलेंगे, आप बोलेंगे कि इनसे मिलके ना मुझे कम्फर्टेबल

नहीं लग रहा है। और कुछ लोगों को हम मिलेंगे तो हम बोलेंगे इनसे मिलके हमें बहुत अच्छा लगा। अब हम डॉक्टर्स नहीं हैं, हम हीलर्स हैं। हीलर्स का सर्कल कौन सा होना चाहिए। व्हाइट होना चाहिए। क्यों व्हाइट होना चाहिए हमारा सर्कल? क्योंकि हमारे एक्रॉस द टेबल, हर दस मिनट बाद जो बैठने वाला है वह इस टाइम दर्द में है। तो इस टाइम उसका सर्कल व्हाइट से थोड़ा सा दूर है। वो दर्द में आया, फिजिकल नहीं सिर्फ इमोशनली दर्द में आया है। एंग्जाइटी में आया है, फीयर में आया है। और सिर्फ वो नहीं आया है उसके साथ एक दो लोग और भी आये हैं। एंड एवरी टेन टू फिफ्टीन मिनट्स यू आर सिटिंग ऑन दिस साइड द टेबल।

आपके उस साइड थोड़े से पेन में आ रहे हैं। अगर हमने अपने सर्कल का ध्यान नहीं रखा तो सारा दिन में वो जो सामने वाली एनर्जी है वो क्या होती जायेगी? हमारे ऊपर असर डालना शुरू करेगी। जब हम व्हाइट ड्रेस पहनते हैं ना, तो सारा दिन बहुत ध्यान रखना पड़ता है। ब्लैक ड्रेस हो तो बहुत इजी होता है कहीं भी बैठो, कुछ भी करो। व्हाइट ड्रेस अगर पहनो तो कुर्सी पर बैठने से पहले भी कुर्सी चेक करनी पड़ती है। क्योंकि अगर बिना चेक किये बैठ गये तो उसके बाद वो मैल कुर्सी की नहीं रहती। बिकॉज नॉउ वी हैव कॉन्टेक्ट विद दैट एनर्जी, वो अब हमारा हिस्सा बन गई है। तो सुबह व्हाइट पहना मतलब सुबह व्हाइट सर्कल था, रात को भी मेरा सर्कल व्हाइट होना चाहिए जब मैं घर आऊँ। उसके लिए हमें क्या करना होगा? सारा दिन सबके साथ रहते हुए अटेन्शन उनके ऊपर नहीं अटेन्शन अपने सर्कल पर कि सिर्फ मेरी दवा इलाज नहीं करती है, सिर्फ मेरे प्रेस्क्रिप्शन में जो लिख रहा हूँ वो इलाज नहीं करता ये मेरा सर्कल भी उस इलाज का हिस्सा है। इसलिए इलाज के साथ सर्कल पर भी हमारा ध्यान होना चाहिए।

नींबू के फायदे

नींबू विटामिन्स, मिनरल्स का भरपूर भण्डार है। नींबू रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। नींबू से विटामिन सी, विटामिन ए, विटामिन बी, प्रोटीन, क्लोरीन, पोटैशियम, सोडियम, आयरन, मैग्नीशियम, वसा प्राकृतिक स्वास्थ्यवर्धक गुण विद्यमान हैं। नींबू को प्राकृतिक एन्टीऑक्सीडेंट माना जाता है। नींबू रोगों, संक्रामण, पेट की बीमारियों की रोकथाम में सक्षम है।

फायदे

पाचन तंत्र दुरुस्त करने और पेट दर्द मिटाने के लिए गुनगुने पानी में 1 नींबू रस और आधा चम्मच अजवाइन मिश्रण पेय सेवन करने से पेट दर्द और पाचन सम्बन्धित समस्याएँ तुरन्त ठीक हो जाती हैं।

गर्मी में लू से बचने के लिए नींबू और पुदीना रस पानी में मिलाकर पीने से लू से निजात मिलता है।

कब्ज, एसिडिटी दूर करने के लिए रोज रात में 10 मिनट सोने से पहले नींबू पानी बिना शर्कर के साथ सेवन करने से कब्ज गैस धीरे-धीरे ठीक हो जाती है।

दाँतों को शीघ्र चमकाने के लिए नींबू रस और बेकिंग सोडा पाउडर मिलाकर दाँत पर हल्का हल्का रगड़ने से दाँत तुरन्त चमक जाते हैं।

रोज़ सलाद में नींबू का रस निचोड़ कर खाने से पेट साफ होता है।

मोटापा कम करने और शरीर की बढ़ी चर्बी घटाने के लिए रोज सुबह गुनगुने पानी में 1 नींबू निचोड़कर, तुलसी पत्तों के रस के साथ सेवन करने से धीरे-धीरे मोटापा से मुक्ति मिलती है। नींबू सेवन तेज़ी से कैलोरी बर्न करने में सहायक है।

ब्लडप्रेशर बढ़ने पर और दिल की बीमारियों में नींबू पानी नियंत्रण करने में सक्षम है। नींबू नसों, धमनियों में सुचारू रक्त संचार करने में सहायक है।

गुदों में पथरी होने पर रोज नींबू रस और सेंधा नमक मिश्रण कर पानी में घोलकर पीने से पथरी धीरे-धीरे गलनी शुरू हो जाती है। पालक, टमाटर खाने से परहेज रखें।

मुँह, दाँत, जबड़ा शिल जाने पर या अचानक दाँतों में जकड़न की स्थिति में अटक जाने पर तुरन्त नींबू की बूँदें मुँह में डालने से जबड़ा खुल जाता है। नींबू रस

तुरन्त लार ग्रन्थि को सक्रीय करने में सक्षम है। नींबू मुँह से बदबू की समस्या ठीक करने में सहायक है।

हाथों में गहरा रंग, तेल, काली ग्रीस, कटहल रस इत्यादि तुरन्त निकालने में नींबू, सरसों तेल सक्षम है। अकसर नींबू होटलों, रेस्टोरेंट, ढाबे आदि जगहों पर भोजन उपरान्त हाथों से तेल चिकनाई छुड़ाने के लिए रखा जाता है।

नींबू सलाद, नींबू पानी पीने से रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। नींबू मौसम बदलाव संक्रमण-वायरल से बचाने में सक्षम है। पाचन क्रिया बढ़ाने में नींबू सेवन सहायक है।



अपने शौक में वे चीज़े भी शामिल करें जिसमें कुछ खर्च न करना पड़ता हो। दरअसल, मनुष्य की सारी गतिविधियाँ धन के आस-पास केंद्रित हो गई हैं। हमने मान लिया है कि धन खर्च करने पर ही खुशी मिलेगी, सुख-सुविधा मिलेगी और इसीलिए सारे प्रयास धन के लिए, धन के पीछे किए जाते हैं। लेकिन, यह जरूरी नहीं कि धन खर्च करने पर खुशी मिल ही जाए। हाँ, जब सबकुछ धन के हिसाब से किया जाता है और अति होने लगती है तो जो मिलता है वह सुख-सुविधा नहीं, भोग में बदल जाता है। भोग के लिए हमारे शास्त्रों में लिखा गया है - भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः। कालो न यातो वयमेव याताः। यानी हमने भोगों को नहीं भोगा,

धन से इतना भी न जुड़िए कि प्रत्येक क्रिया भोग बन जाए

भोगों ने ही हमें भोग लिया। हमने समय को नहीं बिताया, हम ही बीत गए। इसलिए थोड़े सावधान रहें। कुछ काम ऐसे भी करिए जो बिना पैसे के हो रहे हों। आप कितने ही व्यस्त हों, अपने बड़े बुजुर्गों के लिए समय जरूर निकालिए, उनके पास बैठिए। किसी देव स्थान के बाहर लोग बेतरतीब जूते-चप्पल उतारते हैं, कचरा छोड़ जाते हैं, आप उसे साफ कर दीजिए। आप किसी अस्पताल में जाकर मरीजों की सेवा कर सकते हैं। ऐसे बहुत से स्थान हैं। हाँ आप बिना पैसे के कार्य कर उससे खुशी प्राप्त कर सकते हैं। आशय यह नहीं कि धन खर्च न करें, लेकिन धन से इतना भी न जुड़ें कि हर क्रिया भोग में बदल जाए और परिणाम में खुशी गायब हो जाए।



ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088, Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये,

आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक)

कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या

बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

पहचाने मन की अद्भुत शक्ति को

उदाहरण के लिए हम चाहते हैं कि हमारा कल्याण हो जाये, तो उस कल्याण अर्थ अपने घर के एक एक सदस्य के बारे में जो भी हमारी मान्यताएं हैं उसके आधार से हमारे संकल्प कार्य करते हैं। जैसे अगर किसी सदस्य के बारे में आपने मान रखा है कि वह इतने सालों से एक बात के लिए बदलने वाला नहीं है, तो ये बात इतने सालों से आपके अंदर चली आ रही है, हर पल हर क्षण चली है, तो जैसे ही आप उसके बारे में कुछ सोचने की कोशिश करेंगे, जैसे ही सबसे पहले पुराना संकल्प आपके अंदर आयेगा जो आपकी वृत्ति में भरा हुआ है, कि यह तो बदलने वाला नहीं है। तो होगा ये कि संकल्प तो आप करेंगे लेकिन वातावरण में वह पुरानी बात पहले से ही चल रही है तो सबसे पहले वो कार्य करेगी, और संकल्प फलीभूत नहीं होगा। इसलिए सबसे पहले वृत्ति से उन सभी छोटी बड़ी मान्यताओं को बाहर निकालना है, जो हमने इतने सालों से बनाई हुई हैं। अगर उनकी कोई रॉन्ग बात है, तो उसे आप रॉन्ग भले कह सकते हैं, लेकिन आप उसे मन में बिठाते हैं तो वो कुछ दिन में वृत्ति में आ जायेगा, और कोई रॉन्ग बात अपनी वृत्ति में रखते हैं, तो वैसी हमारी दृष्टि और वैसी हमारे संकल्पों की सृष्टि होगी।

इसलिए सबसे पहले वृत्ति में जरा भी किचड़ न हो, तब प्रकृति तक भी आपका सच्चा वायब्रेशन जायेगा और वायुमण्डल भी वैसा बनेगा, इसलिए हर एक की विशेषताओं को देखो और अपनी वृत्ति को सदा शुद्ध रखो, इसके लिए याद



संकल्प शक्ति को बढ़ाने का या उसको सफल करने का सहज साधन है अपनी वृत्ति को बदलना। क्योंकि वृत्ति एक ऐसी शक्ति है जिसका आधार बहुत पहले से हमारे अंदर बना हुआ है और इसका कारण हमारी मान्यताएं रही हैं। जिसकी जैसी मान्यता रही है, उसी आधार से उसकी वैसी वृत्ति बनती चली गई।

एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देनी है।

आज जिस किसी के भी संकल्प में बल नहीं है, तो इसका कारण है हृद की इच्छाएं, और उन इच्छाओं के कारण

वातावरण में जैसे ही संकल्प काम कर रहे हैं, और हम आत्माएं भी उन सभी आत्माओं को इन्हीं संकल्पों का बल दे रहे हैं। हम सबसे यही कहते फिरते हैं कि आज देखो दुनिया पतित हो गई है, कोई ठीक नहीं रहा, अब यह छोटे छोटे संकल्प हैं। चलो मान लेते हैं दुनिया ठीक नहीं है, यदि यह बात हम अपनी बुद्धि में रखेंगे तो संकल्प में बल कैसे आयेगा! तो अपने संकल्पों में बल लाने के लिए अपनी सभी छोटी मान्यताओं को तोड़ो। जब यह मान्यताएं टूट जायेगी, तो जीवन में कोई एक छोटा संकल्प भी एटम बम का काम करेगा, हमारे एक भी संकल्प का वायब्रेशन बहुत दूर तक जायेगा। सिर्फ एक चीज भर दो अपने अंदर कि सभी बहुत अच्छे हैं, मैं भी बहुत बहुत अच्छा हूँ, इससे वातावरण शुभ भावना, शुभ कामना का हो जायेगा, आत्माएं सुखी व शांत बन जायेगी। मतलब किसी के दिमाग तक नहीं उनके दिल तक पहुंचो, हर व्यक्ति की बात को पॉजिटिव वृत्ति से देखो, सुनो और समझो। सदा अच्छा-अच्छा सोचने से अच्छा हो जाता है। आपकी अच्छी वृत्ति निश्चित रूप से वायुमण्डल को परिवर्तन कर ही देगी, यह प्रकृति का नियम है। अगर क्यों व क्या में जायेगे तो परितर्वन कभी भी नहीं हो सकता, इसलिए सुनो लेकिन समाओ नहीं। यही जीवन में संकल्पों को सिद्ध करने का सबसे सुंदर तरीका है।



हसनपुर-हरियाणा। 83वीं शिवजयंती के अवसर पर कलश यात्रा निकालते हुए ब्र.कु. इंदिरा, ब्र.कु. शैली, ब्र.कु. मीनाक्षी, ब्र.कु. शीला तथा अन्य।



हज़ारीबाग-झारखंड। शिवरात्रि के उपलक्ष्य में शिव संदेश हेतु चैतन्य झांकी सजाकर रैली का शिवध्वज लहराकर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. हर्षा।



जमशेदपुर-झारखंड। टाटा स्टील कम्पनी के संस्थापक एवं विश्व विख्यात उद्योगपति जे.एन. टाटा के 180वें जन्म दिवस, जिसे संस्थापक दिवस के रूप में मनाया जाता है, इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज की ओर से भी 'परमात्म संजीवनी रथ' विषय पर झांकी के साथ रैली निकाली गई। इस अवसर पर उपस्थित टाटा समूह के चेयरमैन एन. चन्द्रशेखरन को फूलों का गुलदस्ता देकर स्वागत करते हुए ब्र.कु. अंजु।



झालावाड़-राजस्थान। शिवरात्रि के अवसर पर शिवध्वजारोहण करने के पश्चात् प्रतिज्ञा करते हुए सेन समाज के अध्यक्ष श्याम सेन, विश्व हिन्दू परिषद के उपाध्यक्ष महिपाल, वार्ड पार्षद यतन यादव, भाजपा अध्यक्ष श्यामसुन्दर शर्मा, पाटीदार समाज के प्रदेश अध्यक्ष विष्णु प्रसाद पाटीदार, पी.आर.ओ. हेमन्त सिंह, ब्रह्माकुमारी बहनें तथा अन्य।



कोसली-हरियाणा। महाशिवरात्रि महोत्सव का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. टी.सी. राव, बीजेपी नेता लक्ष्मण सिंह यादव, ब्र.कु. उर्मिला, माउण्ट आबू, ब्र.कु. निर्मला तथा अन्य।



मोतिहारी-बिहार। 83वीं शिवजयंती पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. रानी, प्रो. ब्र.कु. राजनारायण, ब्र.कु. अनिल, ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. अशोक वर्मा तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहली-12(2018-2019)

1		2	3	4	5	6
		7	8			
9				10		
			11		12	
13		14		15		
		16	17			18
			19		20	
		21			22	
		23		24	25	
26			27			

ऊपर से नीचे

- कभी ... नहीं होना है, नाखुश (3)
- अमुख, ...ब्रह्म में लीन हुआ (3)
- निश्चित, मुकर्कर (3)
- फिकर से...कींदा स्वामी (3)
- गुमराह होना, बहकना, रास्ता भूलना (4)
- ...क्लेश मिटाओ, ईर्ष्या (3)
- जाप करना, रटना (3)
- आम सारी दुनिया...हम बच्चों के लिए बाप आये हैं (2)
- ...में भी कभी मुरली मिस नहीं करना (2)
- ...अर्थात् ज्ञानी व योगी तू आत्मा बना है, नाखुश (3)
- स्वच्छ, साफ, शुद्ध (3)
- मारना, हत्या करना (3)
- यह सच्ची-सच्ची गीता...है, विद्यालय (4)
- सर्दी, ठण्डा (2)
- दरद मिटाओ, पाप हरो, गम (2)
- कभी भी...का फूल नहीं बनना है, धतूरा (2)
- देवता, देव, देवी (2)
- एक प्रकार का सतयुगी समूह नृत्य, सिरा (2)

बाएं से दाएं

- न वह हमसे जुदा होंगे न...दिल से निकलेगी, प्यार (4)
- सौगात, पुरस्कार, इनाम (3)
- स्वयं को स्वर्ग में ऊंच पद...बनाना है, काबिल (3)
- श्रृंगार करना, संवारना (3)
- विष, गरल, हलाहल (3)
- भोजन, भोज्य पदार्थ (2)
- स्थिति द्वारा ही विकर्म विनाश होते हैं (4)
- हताशा, हतोत्साहित (3)
- तेरी...में हमें पलना, आंचल, शरण (3)
- पांच पाण्डव में से एक (3)
- ब्रह्मा बाप को फॉलो कर बाप....बनना है, जैसा (3)
- विकारों ने तुम बच्चों की बहुत...की है, बुरा हाल (3)
- आदि-मध्य...का ज्ञान बुद्धि में रख सदा हर्षित रहना है (2)
- छिद्र, छेद, कमजोरी (3)
- संशय, संदेह (2)
- स्थिति के लिए एक बाप से सर्व सम्बन्धों का रस लो (4)

-ब्र.कु. राजेश, शान्तिवन



पटना सिटी-गाय घाट(बिहार)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित प्रभात फेरी का शुभारंभ करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में पटना सिटी चौक के सह थाना प्रभारी किशोर जी, उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रानी, सह संचालिका ब्र.कु. आरोही तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।



ए.पी. कॉलोनी-पीपरपांती। शिवजयंती के अवसर पर झांकी के साथ रैली निकालकर जन जन को शिव संदेश देते हुए ब्र.कु. भाई बहनें।



हाजीपुर-राजपूत कॉलोनी(बिहार)। शिवजयंती के अवसर पर शिव ध्वजारोहण करने के पश्चात् प्रतिज्ञा करते हुए वार्ड पार्षद निकेत कुमार डब्ल्यू, सरकारी अधिवक्ता प्रभात कुमार, ब.कु. अंजली, ब.कु. आरती तथा अन्य।



नोएडा-उ.प्र.। त्रिमूर्ति शिवजयंती पर रैली का शुभारंभ करते हुए विमला बाथम प्रेसिडेंट, यू.पी. स्टेट कमीशन फॉर वुमेन, नवाब सिंह नागर, स्टेट वाइस प्रेसिडेंट ऑफ बीजेपी, ब.कु. मंजू तथा अन्य।



ओ.आर.सी.। 83वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती पर आयोजित कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण करते हुए ब.कु. आशा, पार्षद सुशील चौहान, ब.कु. विजय, ब.कु. मीरा, ब.कु. मौर्या तथा अन्य।



रोहतक-हरियाणा। महाशिवरात्रि महोत्सव पर शिवध्वजारोहण करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में ब.कु. सरला, ब.कु. रक्षा, महंत प्रेम बाबा, चीफ इंजीनियर अशोक अरोड़ा तथा अन्य।



शिकोहाबाद-उ.प्र.। शिवजयंती के अवसर पर शिवध्वजारोहण करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में राष्ट्रीय कवि नारायणदास निर्झर, सांसद दिलीप, ब.कु. पूनम तथा अन्य।



तोशाम-हरियाणा। 83वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए ब.कु. मंजू, ब.कु. शोभा, ब.कु. चंद्रकला, भुरटाना, ब.कु. सुनीता, ब.कु. रोशनी तथा ब.कु. मोनिका।

गर्दन और कंधे में दर्द की शिकायत से दूर रहने के लिए तथा गर्दन तथा कंधों में लचीलापन बरकरार रखने के लिए कुछ आसान से व्यायाम आपके लिए मददगार साबित हो सकते हैं।

कंधों की ज़िम्मेदारी उठाएं

गर्दन और कंधे की मांसपेशियों में दर्द एक सामान्य समस्या बन चुका है, जिससे कोई भी आयु वर्ग अछूता नहीं है। हालांकि, इससे बचने के लिए ये अत्यंत सामान्य व्यायाम और स्ट्रेचिंग कारगर साबित हो सकते हैं। इन्हें आप कहीं भी बैठकर या खड़े होकर कर सकते हैं। घर पर कर रहे हैं तो इससे पूर्व गर्म स्नान ले सकते हैं, जो मांसपेशियों को ढीला करने में मददगार होगा। एक व्यायाम को 30 सेकंड या कम से कम 5 से 10 श्वास तक का समय दें।

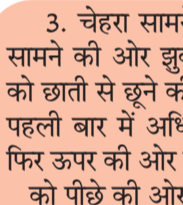
गर्दन के लिए व्यायाम

ये व्यायाम गर्दन को तनाव से मुक्ति दिलाने में मददगार साबित होंगे। ये मांसपेशियों में खिंचाव को कम करते हैं और गले की मोच, सर्वाइकल नर्व स्ट्रेच सिंड्रोम को दूर रखते हैं।

1. सामने की ओर देखें। गर्दन को दाईं ओर फिर बाईं ओर झुकाएं। इस दौरान कंधों को स्थिर रखें, उन्हें ऊपर न लाएं।



2. रीढ़ की हड्डी को सीधा रखें, कंधे तने हुए और चेहरा सामने। चेहरा घुमाते हुए दाईं ओर फिर बाईं ओर देखें। चेहरे को झुकाना नहीं है।



3. चेहरा सामने रखें। गर्दन को सामने की ओर झुकाएं और ठोड़ी को छाती से छूने की कोशिश करें। पहली बार में अधिक न झुकाएं। फिर ऊपर की ओर देखते हुए चेहरे को पीछे की ओर झुकाएं।



4. चेहरा सामने की ओर झुकाते हुए पहले गर्दन को घड़ी की दिशा में और फिर विपरीत दिशा में घुमाएं।

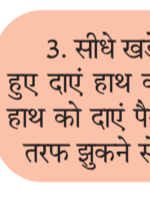
कंधों के लिए व्यायाम

ये व्यायाम मांसपेशियों को स्थान से खिसकने, कंधों के चोट, सूजन आदि से दूर रखते हैं। मांसपेशियों और हड्डियों के आस-पास मौजूद मुलायम ऊतकों में सूजन की आशंका को भी कम करते हैं।

1. दाहिने हाथ को 90 डिग्री पर मोड़ लें और बाएं कंधे के सामने ले जाएं। बाएं हाथ को मोड़कर दाएं हाथ को पीछे की ओर धकेलें।



2. दोनों हाथों से खुद को गले लगाएं। कंधों पर ज्यादा जोर न दें।



3. सीधे खड़े हो जाएं। अब आगे झुकते हुए दाएं हाथ को बाएं पैर पर तथा बाएं हाथ को दाएं पैर पर रखें। इस दौरान एक तरफ झुकने से बचें।



4. बारी-बारी से दोनों हाथों को पीठ के पीछे की ओर लें जाकर नमस्कार की मुद्रा बनाने की कोशिश करें।

कोई भी व्यक्ति या परिस्थिति हमें प्रसन्नता से वंचित नहीं रख सकती

जीवन में कभी-कभी हमें प्रसन्नता महसूस नहीं होती। ऐसे में क्या किया जाए? हम कुछ प्रयोग करके प्रसन्नता को वापस हासिल कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में सबसे पहले तो खुद से कहें कि कोई भी व्यक्ति या स्थिति मुझे खुश या नाखुश नहीं कर सकती। प्रसन्नता तो चॉइंस है, आज मैं प्रसन्न रहने का चुनाव करता हूँ फिर चाहे जो हो जाए। रोज ज़िंदगी में न जाने कितनी बातों को लेकर हम रुष्ट होते हैं या दूसरों को रुष्ट करते हैं। दूसरों को माफ़ करके या माफ़ी मांगकर भी हम अपनी ज़िंदगी में प्रसन्नता लौटा सकते हैं। जरूरी नहीं कि प्रत्यक्ष रूप से उनके समीप जाकर माफ़ी मांगी जाए। यह काम मानसिक स्तर पर भी उतना ही कारगर है, बशर्ते वह क्रिया सच्चे दिल से होनी चाहिए। मुस्कुराकर खुद से कहें कि मैं दुनिया का सबसे भाग्यशाली व्यक्ति हूँ। इसे कई बार दोहराएं। प्रसन्नता का एक सिद्धान्त यह है कि दूसरे जैसे

हैं, उन्हें वैसे ही स्वीकार कर लें। किसी से बहुत अपेक्षाएं नहीं रखें। जिससे भी मिलें, मुस्कुराकर मिलें, अच्छे शब्द कहें और अच्छे विचार व्यक्त करें। लेने वाला बनने की बजाए देने वाला बनने से भी प्रसन्नता बढ़ती है।



इनके अलावा हमें यह समझना होगा कि खुशी हमारा अंतर्निहित मूल्य है। यह हमारे भीतर मौजूद है। मेडिटेशन इसका दोहन करने का रहस्य है। मेडिटेशन में जब हम उच्च शक्ति से जुड़ते हैं, तब हम खुद को शक्ति देते हैं और हम सतत प्रसन्नता के भीतरी खज़ाने को ऊपरी सतह पर लाने में कामयाब होते हैं। हम दूसरों को खुश रखने का प्रयास करें। सुबह टी.वी. शुरू करने या अखबार उठाने अथवा फोन पर सोशल मीडिया से कनेक्ट होने से पहले कुछ समय मेडिटेशन में गुजारकर खुद को लोगों और परिस्थितियों से प्रसन्नता के साथ मिलने के लिए तैयार कीजिए।

यदि कोई आपकी बात न सुने तो...



बच्चे माँ-बाप की नहीं सुनते, विद्यार्थी शिक्षक की नहीं सुनते, नौकर मालिक की नहीं सुनते, कर्मचारी अधिकारी की नहीं सुनते, पत्नी पति की नहीं सुनती, बहु सास की नहीं सुनती और कुछ लोग तो भगवान की भी नहीं सुनते... ये सब शिकायतें हैं आजकल के समाज की। सब अपने को एक दूसरे से ज़्यादा बुद्धिमान समझते हैं। यह अहंकार ही उस मूल समस्या का कारण है। यहाँ कोई किसी की नहीं सुनता। यहाँ तक कि मनुष्य अपनी अंतरात्मा की आवाज़ भी नहीं सुनता। लोग कहते हैं यहाँ गरीबों की कोई नहीं सुनता। तुलसीदास भी कह गये - "तुलसीदास गरीब की कोई न पूछे बात।" ये सब स्थितियाँ हैं कलियुग के अन्त की।

समय बड़ा बलवान है। कालचक्र ने सभी पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया है।

अब सोचो, यदि कोई किसी की सुने ही नहीं तो काम कैसे चले! ऐसे भी बहुत लोग हैं जो सुनते तो हैं, परन्तु करते हैं अपने मन की। हज़ारों लोग राम कथा, भागवत कथा भी सुनते हैं, परन्तु सबकुछ वहीं छोड़ आते हैं। आपने अगर अपने बड़ों की सुनी होगी तो आपके छोटे भी आपकी सुनेंगे। दूसरे हमारी बात सुनें, ये सब चाहते हैं। परन्तु हम भी दूसरों की सुनें, ऐसा सोचने वाले विरले ही हैं। यदि हम दूसरों की सुनेंगे तो दूसरे भी हमारी सुनेंगे।

जब दूसरे आपकी बात नहीं सुनते तो आप आत्मचिन्तन करें कि ऐसा क्यों है? आपके बोल में या तो शक्ति कम है या दूसरे व्यक्ति के लिए आपकी भावना अच्छी नहीं, इसलिए वे आपकी बात नहीं सुनते। आप मालिक हैं, उन्हें नौकर समझते हैं, इसलिए वे नहीं सुनते। आप अपने को बड़ा व दूसरे को छोटा समझकर आदेशात्मक भाषा में बोलते हैं, इसलिए वे नहीं सुनते या आप में अहंकार ज़्यादा है, इसलिए लोग आपकी बात नहीं सुनते।

आप सबके लिए प्रेम, सम्मान व अच्छी भावना रखो तो सब आपकी सुनेंगे। यदि कोई आपकी नहीं सुनता तो आप क्रोधित न हो जाएं, आप परेशान न हो जाएं। आप अपशब्दों का प्रयोग न करें या मारपीट न करें। आप अपने आत्म-सम्मान (स्वमान) में आ जाएं। उससे सब आपको प्यार करेंगे, सम्मान करेंगे और आपकी बात सुनेंगे।

जानें पुरुषार्थ की गुह्यता

राजाई पद प्राप्त करने वाली आत्माओं के लक्षण

जिन आत्माओं ने अपनी गहन तपस्या के बल से सर्वप्रथम सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त किया है, वे कर्मातीत हुए, सर्व सम्पन्न हुए हैं, सर्व शक्तियों से भरपूर हुए हैं, नष्टोमोहा हुए हैं, इसलिए सदा के लिए भगवान के साथी बन गये हैं और महान कार्य में सम्पूर्ण योगदान करने लगे हैं। जिन आत्माओं में दूसरों की पालना करने के संस्कार हैं, ऐसी आत्मा दूसरों को सुख देने वाली है और दुःख हरने वाली है। जो रहमदिल हैं, वो ही राजाई पद के अधिकारी बनते हैं।

सबसे बड़ी पालना हमारे श्रेष्ठ वायब्रेशन्स होते हैं

अन्य आत्माओं की पालना करने के लिए स्वयं को शांति, सुख, शक्ति, खुशी, इन सभी खजानों से भरपूर करके रखें। जितने

हम तनाव मुक्त रहेंगे, योगयुक्त, ज्ञान के श्रेष्ठ सिमरन व स्वमान में रहेंगे, अशरीरीपन का अभ्यास करेंगे, शुभ भावना से भरपूर होंगे तो हमारे द्वारा सर्व आत्माओं की सहज ही पालना होती रहेगी।

पवित्रता के सम्बन्ध में

सम्पूर्ण पवित्र बनने का सुख परम सुख है। पवित्रता ही सुख की जननी है। जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख, शांति, आनंद, प्रेम, संतोष, सब पीछे-पीछे चले आते हैं। हमारी पवित्रता संसार के लिए वरदान है। हम जितने पवित्र बनते जाते हैं, ईश्वरीय

कार्यों में उतना सहयोग मिलता जाता है।

संकल्प कर लें कि पवित्रता ही मेरा जीवन है

कोई भी व्यर्थ संकल्प आते हैं या पास्ट के संस्कार इमर्ज होते हैं या संसार के वातावरण को देख कर उसके प्रभाव में आकर कुछ नकारात्मकता आती है या स्वप्न में कुछ गंदगी आती है, तो तेजी से उन्हें समाप्त करते चलेंगे योगबल के द्वारा, स्वमान के द्वारा, सुंदर चिंतन के द्वारा। यह तीनों चीज़ें अपनायेंगे। योगबल से हमारी शक्तियाँ सूक्ष्म रूप ले लेती हैं।



भरतपुर-राजस्थान। 83वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् जिला पुलिस अधीक्षक हैदर अली जैदी, आई.पी.एस. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. संतोष। साथ है ब्र.कु. अमरसिंह, एडवोकेट तथा ब्र.कु. धर्मपाल।



अकलेरा-झालावाड़। शिवजयंती के अवसर पर शिवध्वजारोहण करने के पश्चात् प्रतिज्ञा करते हुए मुस्कान किन्नर, विधायक गोविंद रानीपुरिया, पूर्व प्रधान बेनाथ मीणा, दिनेश मंगल, सत्यनारायण जाट, परमानंद सुमन, डॉ. कल्याण, ब्र.कु. मीना तथा ब्र.कु. केसर बहन।



वाड़-विहार। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. संगीता, अनुमंडल पदाधिकारी सुमित कुमार, नगरपालिका के मुख्य पार्षद संजय कुमार, उप मुख्य पार्षद अनिल गुप्ता, वार्ड सदस्य चुन्ना जी, ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य।



वरनाला-पंजाब। त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. बृज बहन, डॉ. प्रशांत मित्तल, एम.डी., मेडिसिन, डॉ. संदीप, ब्र.कु. पुष्पा तथा अन्य।



मोहरीपुर-गोरखपुर(उ.प्र.)। शिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण करते हुए गोरखपुर कमिश्नर की धर्मपत्नी डॉ. प्रीति गुप्ता तथा ब्र.कु. पुष्पा। साथ है ब्र.कु. दुर्गा, ब्र.कु. अंकिता तथा अन्य।



जालोर-राज.। नेहरू युवा केन्द्र द्वारा आयोजित 'सकारात्मक सोच, देश भक्ति एवं संस्कार' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. गीता तथा अन्य।



छपरा-बिहार। शिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान जेल सुपरिन्टेन्डेंट मनोज सिन्हा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रो. शंकर शाह के साथ ब्र.कु. अनामिका। साथ है ब्र.कु. मोनी, ब्र.कु. कमलावती तथा अन्य।



जम्मू-सुंदरबनी। ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में कमलेश रानी, के.ए.एस. तथा चमन शर्मा, प्रिन्सीपल।

जो मिथ्या स्वामित्व की भावना से रहित है वही शांत है

- गतांक से आगे...

भगवान ने सर्वोच्च सिद्ध अवस्था अर्थात् ज्ञान की पराकाष्ठा प्राप्त करने वाले के लक्षण बताए हैं। अपनी बुद्धि से शुद्ध होकर तथा धैर्यपूर्वक मन को वश करते हुए इंद्रिय तृप्त विषयों का त्याग कर राग-द्वेष से मुक्त होकर जो व्यक्ति एकांत स्थान में वास करता है।

जो अल्पाहारी हो, जो अपने शरीर, मन, वाणी को वश में रखता है, जो सदैव समाधी में रहता है। तथा पूर्णतः विरक्त, मिथ्या अहंकार,

मिथ्या शक्ति, मिथ्या गर्व, काम, क्रोध तथा भौतिक वस्तुओं के संग्रह से मुक्त है। जो मिथ्या स्वामित्व की भावना से रहित है तथा शांत है वह निश्चित ही आत्म साक्षात्कार के पद को प्राप्त होता है। इस प्रकार जो दिव्य पद पर स्थित है, वह सर्वोच्च सिद्ध अवस्था को अनुभव करता है और प्रसन्न हो जाता है। वह न शोक करता है, न किसी की कामना करता है और वह प्रत्येक जीव के प्रति सम्भाव अर्थात् आत्म भाव को विकसित करता है। ये सिद्ध अवस्था की या ज्ञान की पराकाष्ठा की स्थिति के लक्षण हैं।

अर्जुन यहाँ फिर एक प्रश्न पूछता है कि ज्ञान की पराकाष्ठा क्या है?

भगवान कहते हैं उसे यथार्थ जान सकते हैं। ये है ज्ञान की पराकाष्ठा अर्थात् परमात्मा के प्रति कोई मतभेद या कोई उलझन नहीं रहती है, परमात्मा जो है जैसा है उस स्वरूप में उसको जान लेना उसको प्राप्त करने के बराबर हो जाता है। वह भगवान का आश्रय लेने वाले पुरुष सम्पूर्ण कर्म को सदा करते हुए, ईश्वरीय कृपा में सदा रहने वाले, अविनाशी पद को प्राप्त करता है। इसलिए हे अर्जुन! संपूर्ण कर्म को मन से मुझे अर्पित करके बुद्धियोग मुझसे लगाओ। इस प्रकार मुझमें निरन्तर चित्त लगाने वाला मेरी कृपा

से सर्व विघ्नों को पार कर लेता है। परमात्मा ने यही बताया। कई बार कई आत्मायें ये सोचती हैं कि भगवान की कृपा मेरे पर क्यों नहीं अनुभव होती है तो भगवान ने इसका भी रहस्य बता दिया कि भगवान की कृपा किस पर होती है। जो निरन्तर चित्त लगाने वाला है वह मेरी कृपा से सर्व विघ्नों को

ज्ञान की पराकाष्ठा अर्थात् परमात्मा के प्रति कोई मतभेद या कोई उलझन नहीं रहती है, परमात्मा जो है जैसा है उस स्वरूप में उसको जान लेना उसको प्राप्त करने के बराबर हो जाता है। वह भगवान का आश्रय लेने वाले पुरुष सम्पूर्ण कर्म को सदा करते हुए, ईश्वरीय कृपा में सदा रहने वाले, अविनाशी पद को प्राप्त करता है।



- ब्र. कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

पार कर लेगा। परन्तु यदि अहंकार वश तुम मेरी मत नहीं सुनोगे तो नष्ट हो जाओगे। क्योंकि तुम्हारी प्रकृति अर्थात् संस्कार तुम्हें प्रवृत्त होने के लिए मजबूर करेंगे। कौन से संस्कार? जो अशुद्ध संस्कार हैं वो उसी दिशा में प्रवृत्त होने के लिए हमें मजबूर करते रहेंगे। जैसे आजकल की दुनिया के अंदर हम ये बात बार-बार सुनते हैं कि कोई व्यक्ति कहता है कि मैं गुस्सा करना चाहता नहीं हूँ लेकिन आ जाता है। तो ये बात क्या सिद्ध करती है कि गुस्सा करना चाहता नहीं हूँ, क्रोध करना चाहता नहीं हूँ, लेकिन क्रोध आ जाता है अर्थात् वो प्रकृति, वो संस्कार उसको मजबूर कर रहा है गुस्सा करने के

लिए। तो इस प्रकार कमजोरी के संस्कार हमें अपनी तरफ खींचेंगे और मजबूर करेंगे। जो कमजोरी के संस्कारों के वश जीवन जीता है उसकी गति क्या हो सकती है? वह नष्ट हो जायेगा। वह परमात्म कृपा को अनुभव नहीं कर पाता है। इसलिए हे भारत! यहाँ अर्जुन को हे भारत! क्यों कहा गया? क्योंकि

एक अर्जुन की बात नहीं है,

सारे भार तवासी अर्जुन हैं। इसीलिए हे भारत, सभी भार तवासी

सम्पूर्ण भाव से उस ईश्वर की शरण ग्रहण करो, उसकी कृपा से परम शांति को प्राप्त करो और इस प्रकार अपनी कमजोरी के जो संस्कार हैं, स्वभाव हैं, उनको खत्म कर दो, ताकि वो हमें मजबूर न करें प्रवृत्त होने के लिए। उसी के साथ भगवान कहते हैं इस प्रकार ये गुह्य गोपनीय ज्ञान मैंने मेरे लिए कहा है, इसलिए मैं तेरे हित के लिए कहूँगा। भगवान यहाँ दोस्ती का भाव व्यक्त करते हैं और कहते हैं - तू मेरा मित्र है, अति प्रिय है, इसलिए मैं तुम्हें हित की बात ही कहूँगा। इस पर पूर्ण विचार करने के पश्चात् तेरी जैसी इच्छा हो वैसा करना। इतना कहकर भगवान भी न्यारा हो जाते हैं। इतनी अच्छी ज्ञान की बात सुनाने के बाद भी हमारे ऊपर वह थोपने का प्रयास नहीं करता है कि तुम्हें मेरी बात को मानना ही चाहिए। नहीं। कितनी निर्माणता व्यक्त करते हैं। वे हमें सिखाने का प्रयत्न करते हैं। ये गुह्य गोपनीय ज्ञान मैंने तेरे लिए ही कहा है क्योंकि तू मेरा अति प्रिय है। इसलिए मैं तुम्हें हित की बात ही कहूँगा। परन्तु फिर भी इस पर पूर्ण विचार करने के पश्चात् ही जैसी तेरी इच्छा हो, वैसा करना। इतना न्यारा, निराला है परमात्मा।

- क्रमशः

यह जीवन है...

कई बार क्या होता है कि हम किसी को अच्छी सलाह देते हैं, लेकिन कभी कभी वह हमारी राय नहीं मानते हैं, उस समय हमें ऐसा लगता है कि मेरा कोई कहा नहीं मानता है, मेरी कोई रिस्पेक्ट नहीं करता है। मुझसे कोई प्यार नहीं करता, मेरी कोई वैल्यू नहीं है।

लेकिन आप ये सोचें कि आपने जो राय दी है, उस सलाह को धारण करने की क्षमता उसमें नहीं है। आप अपने आपको बहुत प्यार करते हैं। इसलिए ये सोचकर निराश ना हों कि कोई आपकी राय नहीं मानता है। हमारे मन का खुश होना, उनको एक्सेप्ट करना उनके लिए दुआएं और शक्ति बन जाता है।

ख्यालों के आईने में...

जिसे जीना आता है वह बिना किसी सुविधा के भी खुश मिलेगा, जिसे जीना नहीं आता वह सभी सुविधाओं के होते हुए भी दुःखी मिलेगा। जिन्दगी म्यूजिक प्लेयर नहीं है जिसमें आप अपनी पसंद के गीत सुन सकें, जिन्दगी एक रेडियो है, उसमें जो भी आ रहा है उसी से मनोरंजन करें।

खिचड़ी यदि बर्तन में पके, तो बीमार को ठीक कर देती है और यदि दिमाग में पके, तो इंसान को बीमार कर देती है।



दिल्ली-मोहम्मदपुर। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बी.एस.टोकस, कांडसलर, एस.डी.एम.सी., सांसद मिनाक्षी लेखी, ब्र.कु. वेदांती, अफ्रीका, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कंचन, राधिका अबरोल टोकस, कांडसलर, एस.डी.एम.सी. तथा अन्य।



धोलाभाटा-राज। महाशिवरात्रि महोत्सव पर शिवध्वजारोहण करते हुए कांग्रेस नेता हेमंत भाटी। साथ हैं जिला अध्यक्ष शिवशंकर हेडा, किशनगढ़ एयरपोर्ट के डायरेक्टर अशोक कपूर, ब्र.कु. कल्पना तथा अन्य।



भद्रक-ओड़िशा। शिवजयंती के अवसर पर ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में सजाई गई चैतन्य मनोरम झाँकी।



सीतापुर-उ.प्र.। ग्यारह दिवसीय 'तनाव मुक्ति तथा योग अनुभूति शिविर' का उद्घाटन करते हुए आशीष मिश्रा, पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष, साकेत मिश्रा, भा.ज.पा. नेता, महन्त राजेन्द्र प्रसाद मिश्रा, सीताराम मंदिर, हाफिज मस्त रहमानी, पद्मभूषण, मोहम्मद कासमी, शहर इमाम, हरीश शाह, अध्यक्ष, भारत विकास परिषद, सतनाम सिंह, अध्यक्ष, गुरुसिंह सभा, राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल, अध्यक्ष, अग्रवाल समाज, सुनील टंडन, अध्यक्ष, व्यापार मंडल नगर, ब्र.कु. योगिनी, ब्र.कु. पूनम तथा ब्र.कु. रश्मि।



मथुरा-उ.प्र.। त्रिमूर्ति शिवजयंती के अवसर पर शिवध्वजारोहण करते हुए जिला न्यायाधीश राजीव भारती, सीनियर अकाउंट ऑफिसर एम.वी.पी. संतोष कुमार, यूनिशन लीडर मुकेश शर्मा, ब्र.कु. कृष्णा, ब्र.कु. मनोज, ब्र.कु. आलोक तथा अन्य।



जगनेर-आगरा। शिवजयंती के अवसर पर शिवध्वजारोहण करने के पश्चात् अग्रवाल मित्र मंडल के अध्यक्ष दाऊदयाल बिंदल, पुलिस विभाग के नरेश भदोरिया तथा जगनेश को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. एकता तथा ब्र.कु. शिखा।

कथा सारिता

एक समय की बात है। एक व्यापारी की तीन बेटियाँ थीं। एक दिन उसे किसी काम से दूर देश जाना था। जाने से पहले उसने अपनी बेटियों को अपने पास बुलाया

ब्यूटी और बीस्ट

और पूछा कि तुम तीनों के लिए परदेस से क्या लाऊँ? पहली बेटि ने सुंदर कपड़े मांगे, दूसरी ने गहने और तीसरी बेटि जिसका नाम ब्यूटी था, उसने कहा उसे लाल गुलाब का फूल चाहिए। व्यापारी उनके लिए तोहफा लाने का वायदा करके घर से निकल पड़ा। व्यापारी अपना काम खत्म करके जब वापस घर की ओर लौट रहा था, तब अचानक आंधी तूफान आ गया और वह रास्ता भटक गया और एक महल के पास पहुँच गया। बाहर अंधेरा था और महल से रोशनी आ रही थी तो उसने सोचा कि आज रात वो इसी महल में रुक जाएगा। व्यापारी महल के अंदर गया पर उसे वहाँ कोई नहीं दिखा। टेबल पर बहुत सारे स्वादिष्ट पकवान रखे देख कर उसकी भूख और भी बढ़ गई और उसने उन्हें खाना शुरू कर दिया। पेट भर कर खाना खाया और मुलायम, गद्देदार बिस्तर पर सो गया। जब सुबह उठकर बाहर देखा तो सुंदर गुलाब का बगीचा दिखा। उसने बगीचे से अपनी बेटि के लिए फूल तोड़ लिया। तब अचानक से वहाँ एक राक्षस प्रकट हुआ और बोला मैंने तुम्हें अपने महल में खाने और रात बिताने दी और तुम मेरे ही बगीचे से फूल तोड़ रहे हो। व्यापारी डर गया और उसने बताया कि मैंने

यह फूल अपनी बेटि के लिए तोड़े हैं। राक्षस ने कहा वो उसे जाने देगा लेकिन शर्त यह है कि उसे अपनी बेटि को उसके पास भेजना होगा। व्यापारी ने डर कर हाँ कह दिया और अपने घर लौटकर अपनी तीनों बेटियों को बताया। तब ब्यूटी ने कहा, आप घबराएँ नहीं, मैं आपका वायदा निभाऊँगी। ब्यूटी उस महल में चली गई, राक्षस का डरावना रूप देख कर पहले तो वो डर गई, लेकिन राक्षस ने उसका स्वागत किया। सबसे सुंदर कमरा उसे रहने के लिए दिया और उसे अच्छे से रखने लगा। दोनों को एक दूसरे का साथ अच्छा लगने लगा। राक्षस को ब्यूटी से प्यार हो गया था और उससे शादी करना चाहता था। लेकिन ये बात उसे बताने में डर रहा था कि ब्यूटी उसके जैसे डरावने दिखने वाले राक्षस से क्यों शादी करेगी? ब्यूटी एक बार बाज़ार से लौटी तो राक्षस ज़मीन पर ऐसे पड़ा था मानो मर गया हो। ये देख कर वो रोने लगी और कहने लगी, मैं तो तुमसे शादी करना चाहती थी। ये सुनकर राक्षस का रूप बदल गया और वो एक सुंदर राजकुमार बन गया। तब राजकुमार ने उसे बताया कि उसे श्राप मिला था कि जब कोई लड़की उसे राक्षस के रूप में प्यार करेगी, सूत की जगह उसके गुणों को पसंद करेगी, तब ही उसे उसका असली रूप मिलेगा। शिक्षा - जीवन में सूत से ज़्यादा गुणों का महत्व होता है।

महाकवि कालिदास रास्ते में थे। प्यास लगी। वहाँ एक पनिहारिन पानी भर रही थी। कालिदास बोले : माते! पानी पिला दीजिए बड़ा पुण्य होगा।

पनिहारिन बोली : बेटा, मैं तुम्हें जानती नहीं। अपना परिचय दो। मैं पानी पिला दूँगी।

कालिदास ने कहा : मैं मेहमान हूँ, कृपया पानी पिला दें।

पनिहारिन बोली : तुम मेहमान कैसे हो सकते हो? संसार में दो ही मेहमान हैं - पहला धन और दूसरा यौवन। इन्हें जाने में समय नहीं लगता। सत्य बताओ कौन हो तुम? (तर्क से पराजित कालिदास अवाक् रह गए)

कालिदास बोले : मैं सहनशील हूँ, अब आप पानी पिला दें।

कौन हो तुम ?

पनिहारिन ने कहा : नहीं, सहनशील तो दो ही हैं - पहली धरती, जो पापी पुण्यात्मा सबका बोझ सहती है, उसकी छाती चीरकर बीज बो देने से भी अनाज के भंडार देती है। दूसरे पेड़, जिनको पत्थर मारो फिर भी मीठे फल देते हैं। तुम सहनशील नहीं। सच बताओ तुम कौन हो? (कालिदास मूर्छा की स्थिति में आ गए और तर्क-वितर्क से झल्ला उठे।) कालिदास बोले मैं हठी हूँ। पनिहारिन बोली : फिर असत्य। हठी तो दो ही हैं - पहला नख और दूसरे केश, कितना भी काटो, बार-बार निकल आते हैं। सत्य कहें कौन हैं आप? (कालिदास अपमानित और पराजित हो चुके थे।) कालिदास ने कहा : फिर तो मैं मूर्ख ही हूँ। पनिहारिन ने कहा : नहीं, तुम मूर्ख कैसे हो सकते हो? मूर्ख दो ही हैं - पहला राजा, जो बिना योग्यता के भी सब पर शासन करता है और दूसरा पंडित, जो राजा को प्रसन्न करने के लिए गलत बात पर भी तर्क करके उसको सही सिद्ध करने की चेष्टा करता है। (कुछ बोल न सकने की स्थिति में कालिदास वृद्धा पनिहारिन के पैरों पर गिर पड़े और पानी की याचना में गिड़गिड़ाने लगे) वृद्धा ने कहा : उठो वत्स! (आवाज़ सुनकर कालिदास ने ऊपर देखा तो साक्षात् माता सरस्वती वहाँ खड़ी थीं, कालिदास पुनः नतमस्तक हो गए) मैंने कहा : शिक्षा से ज्ञान आता है न कि अहंकार से। तूने शिक्षा के बल पर प्राप्त मान और प्रतिष्ठा को ही अपनी उपलब्धि मान लिया और अहंकार कर बैठा इसलिए मुझे तुम्हारे चक्षु खोलने के लिए ये स्वांग करना पड़ा। कालिदास को अपनी गलती समझ में आ गई और भरपेट पानी पीकर वे आगे चल पड़े। सीख : विद्वता पर कभी घमंड न करें। घमंड विद्वता को नष्ट कर देता है। दो चीजों को कभी व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए।



फिरोजपुर-पंजाब। शिवरात्रि के उपलक्ष्य में 'शिव जयंती सो गीता जयंती' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में विधायक परमिन्दर सिंह पिकी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. ऊषा तथा ब.कु. शक्ति।



अवोहर-पंजाब। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में शिव ध्वजारोहण करते हुए सीमा सुरक्षा बल के डीआईजी टी.आर. मीना, ब.कु. पुष्पलता, जिला कांग्रेस के पूर्व प्रधान विमल ठठई, पूर्व जिला भाजपा प्रधान सीताराम शर्मा, रिटायर्ड आयकर अधिकारी बलराम सिंगला, डॉ. जशवंत सिंह, डॉ. संजय गुप्ता, डॉ. ऋतु गुप्ता, डॉ. आकाश खुराना, डॉ. कंचन खुराना, एडवोकेट रमेश शर्मा, शकुन्ता सोनी, शिक्षाविद मोहनलाल कुदाल, पाल सभा के महासचिव दविन्द्र पाल, ब.कु. सुनीता, लेखक परिषद के प्रधान राज सदीप तथा अन्य।



फिजी। शिवजयंती के अवसर पर शिवध्वजारोहण करते हुए संजय शुक्ला, हेड ऑफ चांसरी, इंडियन हाई कमीशन, अनिल शर्मा, सेकेण्ड सेक्रेटरी, हिन्दी एंड कम्युनिटी अफेयर्स, ब.कु. शांता तथा अन्य।



रुड़की-उत्तराखण्ड। शिवजयंती के अवसर पर कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए धर्म गुरु पंडित रमेश सेमवाल, शहर काजी आमीर अहमद, सिक्ख धर्म गुरु सरदार पाठक, ब.कु. विमला तथा ब.कु. बबीता।



जोधपुर-चौपासनी हाउसिंग बोर्ड (राज.)। सभागीय आयुक्त ललित कुमार से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब.कु. राणा।



अजमेर-राज.। शिवरात्रि के उपलक्ष्य में शिवध्वजारोहण करते हुए ब.कु. कमलेशा तथा अन्य।



देहरादून। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए स्वामी विवेकानंद सरस्वती महाराज जी, आचार्य भगवदाचार्य, मौलाना इरशाद अली, आचार्य सुरेन्द्र शुक्ला तथा ब.कु. मीना।



वहल-हरियाणा। शिवरात्रि कार्यक्रम में शिवध्वजारोहण करते हुए ब.कु. शकुन्ता, ब.कु. अशोक, ब.कु. पूनम, समाज सेवी विशम्बर दयाल साबू, प्रगतिशील किसान महेन्द्र साबू तथा अन्य भाई-बहनें।

रानीपोखरी-उत्तराखण्ड। 83वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती पर रैली को हरी झंडी व शिव ध्वज लहराकर रवाना करते हुए लायन्स क्लब के पूर्व अध्यक्ष डॉ. हरिओम प्रसाद, डॉ. बी.एन.श्रीवास्तव, ब.कु. बहनें तथा अन्य।

वर्तमान व्यवहार ही सबकुछ नहीं

एक नदी के किनारे दो पेड़ थे। उस रास्ते एक छोटी सी चिड़िया गुजरी और पहले पेड़ से पूछा- बारिश होने वाली है, क्या मैं और मेरे बच्चे तुम्हारी टहनी में घोंसला बनाकर रह सकते हैं? उस पेड़ ने मना कर दिया। चिड़िया फिर दूसरे पेड़ के पास गई और वही सवाल पूछा, दूसरा पेड़ मान गया। चिड़िया अपने बच्चों के साथ खुशी-खुशी दूसरे पेड़ में घोंसला बनाकर रहने लगी। एक दिन इतनी अधिक बारिश हुई कि इसी दौरान पहला पेड़ जड़ से उखड़ कर पानी में बह गया। जब चिड़िया ने उस पेड़ को बहते हुए देखा तो कहा - जब तुमसे मैं और मेरे बच्चे शरण मांगने के लिए आये तब तुमने मना कर दिया था, अब देखो तुम्हारे उसी रूखे बर्तव की सजा तुम्हें मिल रही है। इसका उत्तर पेड़ ने मुस्कराते हुए दिया। उसने कहा - मैं जानता था कि मेरी जड़ें कमजोर हैं और मैं इस बारिश में टिक नहीं पाऊंगा, मैं तुम्हारी और तुम्हारे बच्चे की जान खतरे में नहीं डालना चाहता था। मना करने के लिए मुझे क्षमा कर दो और ये कहते-कहते पेड़ बह गया। किसी के इनकार को हमेशा उसकी कठोरता न समझें, क्या पता उसके उसी इनकार से आपका भला हो। कौन किस परिस्थिति में है शायद हम नहीं समझ पाएँ। इसीलिए किसी के चरित्र और शैली को उनके वर्तमान व्यवहार से ना तोलें।



व्यक्ति के ठहरने के तीन कारण

जब हम अपने जीवन को बहुत ध्यान से देखेंगे तो हम पायेंगे कि हमें हमेशा तीन बातों की तलाश होती है, वो या तो किसी से कुछ प्राप्त की बात हो, या किसी कर्तव्य की बात हो, या किसी से बहुत गहरा लगाव हो।
ये प्रमुखतः तीन कारण हैं, जो एक व्यक्ति को किसी एक स्थान पर ठहरने को विवश करते हैं। जैसे अगर आपको किसी के लिए भावना बैठ जाये, उसके प्रति श्रद्धा हो तो उस श्रद्धा के लिए, उस भावना के लिए आपका मन वहां पर रहने का करेगा, उसके लिए सोचने का करेगा, उसके लिए कुछ करने के लिए करेगा, इसी प्रकार जब हम किसी से बहुत गहराई से अटैच हो जाते हैं तो भी हमारा मन उस लगाव के कारण वहां पर रुकता है। इसलिए जितने भी इतिहास में प्रेम प्रसंग हुए उदाहरण के रूप

कई बार हम देखते हैं कि इंसान एक स्थान से दूसरे स्थान पर भागता ही रहता है लेकिन अगर उससे पूछा जाये कि आप एक स्थान पर क्यों ठहर नहीं पा रहे हैं तो इसका कारण ना उसे समझ में आता है ना हमें। पूरा जीवन हम इस बात को पकड़ने में रह जाते हैं कि आखिर ठहरने का क्या कारण हो सकता है। क्योंकि जब तक कहीं ठहराव नहीं होगा तब तक उन्नति नहीं हो सकती। जैसे इस ज्ञान में हम आये लेकिन आने का कारण अगर कुछ ठोस नहीं होगा तो हमारी उन्नति भी उतनी नहीं होगी।

में लैला मजनू, हीर रांझा हैं, किसी और जगह के थे, किसी यात्रा पर गये, और किसी के प्रेम में वो वहां पर ठहर गये, बंध गये और अपना शेष पूरा जीवन वहीं बिता दिया। इसी तरह कोई भी बहुत बड़ी जिम्मेवारी जिससे हमको लगता है कि अगर हम यह जिम्मेवारी पूरा नहीं करेंगे या इसको हम छोड़ेंगे तो इसमें देश का नुकसान होगा, उदाहरण के लिए जैसे जितने भी देशभक्त थे कहीं और से आये, लेकिन देश के प्रति उन्हें अपना कर्तव्य समझ में आया, इसका उन्हें एहसास हुआ तो उन्होंने अपना सर्वस्व जीवन उस देशभक्ति के कारण बलिदान कर दिया, समर्पण कर दिया। तो यह तीन

है, रहता है और वहां से जाता नहीं है। चाहे जितने भी शोधकर्ता देखें, आये थे किसी स्थान पर घूमने के लिए, लेकिन किसी न किसी कारण वश चाहे उनके लिए शोध का विषय हो या कोई और कारण बना जिसके कारण वो वहीं रच बस गये। अब हम इस परमात्म ज्ञान की थोड़ी चर्चा कर लेते हैं। इस परमात्म ज्ञान में भी वही उन्नति कर पा रहे हैं, या ठहर पाये हैं, या चल रहे हैं या सहज भाव से चल पा रहे हैं जिन्हें शिव बाबा के प्रति सच्ची श्रद्धा, संस्था के प्रति सच्चा भाव, बाबा के कर्तव्यों से अति स्नेह है। नहीं तो इस ज्ञान में आने का

उदाहरण के लिए इस दुनिया में हम लाखों लोगों से आकर्षित हो सकते हैं, लेकिन प्यार एक दो से ही कर सकते हैं, सबसे नहीं। शुरू में यह ज्ञान सबको अच्छा लगता है लेकिन ज्ञान से प्यार हो जाये, ये ज्ञान ही उनके लिए जीवन बन जाये, यह बहुत कम के साथ होता है, शायद इसीलिए परमात्मा कहते हैं कि यहां आठ रत्न, एक सौ आठ, सोलह हजार की माला बनती है, क्योंकि वह ज्ञान को सच्चे दिल से समझते हैं और समते हैं। उनको बाबा से गहरा लगाव भी है और कर्तव्य की समझ भी है। ऐसा नहीं कि बाकी नहीं समझते हैं, वे भी समझते हैं लेकिन अपनी सुविधा अनुसार, तो जिन्होंने

जिम्मेवारी का एहसास नहीं है, वो यहां रहते भी जैसे दुनियावी जीवन जी रहे हैं, क्योंकि परमात्मा के साथ रहना, परमात्मा के घर में रहना और घर में रहने के बाद बाहर की बातें करना, बाह्य बातों में समय देना, यह परमात्मा के प्रति सच्चा प्यार, श्रद्धा की निशानी नहीं, यह परमात्मा के घर के साथ, परमात्मा के कर्तव्य के साथ न्याय नहीं है। शायद इसीलिए इस जीवन को अपनाने के बाद भी हम संतुष्ट नहीं हैं क्योंकि जहां पर सौ प्रतिशत इनवेस्टमेंट है, वहीं सौ प्रतिशत रिजल्ट है। अर्थशास्त्र के हिसाब से भी कहा जाता है कि जितना हम इनवेस्ट करते हैं उत्पादकता भी उसी

हिसाब से होती है। जैसे अगर हमने एमबीए करने में दस लाख लगाये तो हमको कम से कम डेढ़ लाख की जॉब तो मिलनी चाहिए, लेकिन अगर किसी ने दस हजार का कंप्यूटर कोर्स किया है तो उसको दो हजार की जॉब ठीक ही है ना! इसी तरह यहां पर समर्पित होने या बाबा का बनने से फायदा तब है जब हम अपना समय, संकल्प, शक्ति सौ प्रतिशत इस कर्तव्य में लगायें, तो उसका सौ प्रतिशत रिटर्न मिलेगा ही, इसीलिए सबसे पहले यह चेक करना है कि मैं यहां क्यों हूँ, मुझे कर्तव्य की फीलिंग है? मुझे बाबा से सच्चा प्यार है? उनके प्रति सच्ची श्रद्धा है? अगर है तो रहना सार्थक है, नहीं तो हम अपने साथ न्याय नहीं कर पा रहे हैं। ये है हमारी सच्ची समझ और उसकी परख। इस पैरामीटर पर खुद को रखकर चेक करें और आगे बढ़ें।



डॉ. कु. अनुज, दिल्ली

उपलब्ध पुस्तकें जो आपके जीवन को बदल दें



दृढ़ पवित्रता और मास्टर सर्वशक्तिकान के अभ्यास से सफलता

प्रश्न : मैं एक साल से ज्ञान में हूँ, घर वाले शादी करवाना चाहते हैं लेकिन मैं शादी नहीं करना चाहती। मैं घर वालों से झगड़ा भी नहीं करना चाहती, ना ही उनका दिल दुखाना चाहती हूँ। कृपया बतायें कि बीच का कोई ऐसा मार्ग निकल सकता है?
उत्तर : बहुत ही अच्छा प्रश्न आपका है कि सांप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे। लेकिन आपको अपनी प्योरिटी में दृढ़ तो होना ही पड़ेगा। एक बार तो बताना पड़ेगा माँ-बाप को कि मैं ये पवित्र जीवन क्यों जीना चाहती हूँ। देखिये बहुत कुमार और कुमारियां स्ट्रीट कहते हैं कि हम शादी नहीं करेंगे तो ये बात कहीं न कहीं हर्ट करने लगती है, दूसरों का फिर दबाव बनने लगता है। सीधा नहीं, अपनेपन से, बहुत प्यार से क्लीयर कर दें कि हम शादी क्यों नहीं करना चाहते। जैसे हमें प्रभु मिलन हुआ है, उसकी प्राप्ति हुई है, उसने संदेश दिया है कि बच्चे तुम इस अन्तिम जन्म में पवित्र बनो। तुम्हें भारत की बहुत बड़ी सेवा करनी है। तुम्हें प्रकृति को पावन बनाना है। जितनी अच्छी स्थिति में होकर अपनी सुन्दर बात कहेंगे उतना लोग सहमत होंगे कि आपकी बात ठीक है। शायदियां तो सभी कर रहे हैं हमारे घर में, दो ने कर ली, एक को ब्रह्मचर्य में रहने दो। सहयोग मिल जायेगा, लेकिन रोज सवेरे उठकर आपको प्रैक्टिस करनी है जो सबकॉन्शियस माइंड की प्रैक्टिस है। मैं मास्टर सर्वशक्तिकान हूँ, और ये आत्म्यायें माँ-बाप जो भी बन्धन

डालते हैं वे मेरे गुड फ्रेंड हैं, मेरे सहयोगी हैं, और बस 21 दिन तक ये कर लें तो माँ-बाप निश्चित रूप से सहयोगी बन जायेंगे। और इनका ये प्रेशर, ये बंधन समाप्त हो जायेगा।
प्रश्न : मैंने पुणे में एडमिशन लिया है। मुझे यहाँ बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा है। मुझे कुछ भी यहाँ



- राजयोगी व. कु. सूर्य

की बातें अच्छी नहीं लग रही हैं, मैं यहाँ क्या करूँ? मुझे गुस्सा भी बहुत आता है, ज्यादा गुस्सा आने पर मैं रोती भी हूँ, मुझे समझ में नहीं आ रहा है मैं क्या करूँ?
उत्तर : हरेक बच्चों के साथ तो ये होता ही है, नई जगह गये, जब तक

अच्छे फ्रेंड न मिलें, जब तक उनसे न घुले-मिलें, तब तक ये थोड़ी उदासी की स्थिति रहती है बच्चों में। माँ-बाप को भी छोड़ कर जाते हैं तो मोह तो रहता है ना। माँ याद करती होगी आपको, तो माँ के इस मोह के वाइब्रेशन से आप विचलित होते रहते होंगे। ये सभी माताओं को बहुत ध्यान से समझ लेना चाहिए कि मोह तो माता का है बच्चों में, लेकिन वो मोह इतना ना हो कि वो जहाँ गये हैं वो वहाँ चैन से ना रह पायें। ये बहुत सूक्ष्म वाइब्रेशन्स की गति है जो इफेक्ट करती रहती है। अब आपको तो यही सोचना है कि मैं तो यहाँ पढ़ाई के लिए आई हूँ। किसी और एन्जॉयमेंट के लिए नहीं। अब मुझे पढ़ाई पर ध्यान देना है। तो आपकी एनर्जी जब पढ़ाई में लगने लगेगी ना तो बाकी सब चीजों को आप भूल जायेंगी। ये मोह भी धीरे-धीरे हल्का हो जायेगा क्योंकि आखिर कुछ करना है तो माँ को छोड़के तो जाना ही पड़ता है। लड़की की शादी होती है तो भी वो माँ को छोड़के जाती है, नये घर में जाती है तो दो-चार दिन सब पराया-पराया लगता है, फिर उसे वहीं रहना है क्योंकि वो उसके अपने हैं तो घुल-मिल जाती है तो ठीक हो जाती है। तो पढ़ाई पर ध्यान दें और तब तक मैं

मास्टर सर्वशक्तिकान हूँ और एक महान आत्मा हूँ, मैं बहुत खुशनासीब हूँ, मैं बहुत भाग्यवान हूँ... सवेरे उठते ही ये संकल्प किया करें पांच-पांच बार। तो मन एक एनर्जी को प्राप्त करेगा और बहुत जल्दी आपका मन लग जायेगा।
प्रश्न : मुझे ग्यारह साल से डरावने सपने बहुत आते हैं। स्वप्न में कोई मरा हुआ व्यक्ति मुझे जिंदा दिखाई देता है। कभी कोई भूत प्रेत दिखाई देते हैं, तो कभी सांप या जंगली जानवर। मैं बहुत डर जाती हूँ। मैं ऐसा क्या करूँ जो मुझे ऐसे सपने ना आयें?
उत्तर : आपको बस सिम्पल प्रयोग करना है। सोने से पहले बहुत गुड फीलिंग से... मैं मास्टर सर्वशक्तिकान आत्मा हूँ और लिखें 108 बार कुछ दिन, फिर भले ही उसको 51 बार कर दें। और कम समय रहे तो 21 बार अवश्य लिखें। और मैं निर्भय हूँ ये संकल्प करें। सोते-सोते मेरी नींद बिल्कुल स्वप्न रहित होगी, मैं बहुत निर्भय हूँ, मेरी नींद स्वप्न रहित होगी... ये संकल्प करते-करते सोयें। कुछ ही दिनों में आपको सफलता मिलने लगेगी। अगर हम रात को कुछ अच्छे अभ्यास करके सोते हैं, अपने पेट को अच्छा रखते हैं, एसीडिटी ना हो रही हो और मेडिटेशन करके सोयें, कुछ अच्छी क्लास सुनकर सोयें और इस तरह सबकॉन्शियस माइंड के प्रयोग करके सोयें तो निश्चित रूप से बहुत चीजें ठीक हो जाती हैं।
Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपको अपना 'पीएस ऑफ माइंड चैनल'

Peace of Mind CABLE Network

hathway@ DEN DGCABLE

GTPL FASTWAY UCN JIO TV

TATA Sky 1065 airtel digital TV 678

VIDEOCON 497 dishtv 1087

नये रिश्ते हमें इसलिए अच्छे लगते हैं क्योंकि हम उनकी कमियाँ नहीं जानते, कमजोरी को देखते ही सम्बंधों में कटुता आनी शुरू हो जाती है। सम्बंधों में मधुरता के लिए, कमी को नजर अंदाज कर, गुण

हिसाब-किताब चुकू हो रहा है, इस सच को मानकर खुद के लिए और सामने वालों के लिए रहमदिल बनने से सम्बन्ध में सरलता आएगी। क्षमा की भावना सम्बन्ध में मधुरता लाती है। सामने वाले ने जो भी

सहयोग की भावना। छोटी-छोटी गलतियों पर किसी का अपमान न कर क्षमा करने की प्रवृत्ति को अपनाना। कुटुम्ब परिवार में भी वाणी का प्रयोग करते समय यह अवश्य ख्याल रखा जाए कि मैं जिससे बात करता

सम्बंधों में मधुरता के लिये...



किया वो उसके स्वभाव संस्कार के वश होकर किया। वो तो परवश है हम तो नहीं। यही भावना सम्बन्धों में दूरियाँ मिटा देती है।

गुणों को देखें, अवगुणों को नहीं

दूसरों के गुणों को स्वीकार करना भी अपने आप में एक

महानता है। हम जितना दूसरों के गुणों का वर्णन करते हैं उतना ही हमारा मन सरल होता जाएगा और सम्बन्धों में भी मधुरता आएगी। हमें दूसरों के अवगुण तथा बुरे कर्म को देखकर स्वयं उत्तेजित या क्रोधान्वित नहीं होना चाहिए। बल्कि सदा अपने इस लक्ष्य को सामने रखना चाहिए कि हमें तो अपना जीवन हीरे तुल्य बनाना है, हमें तो गुण-ग्राहक बनना है, अवगुणों को तो अपने जीवन से निकालना है।

उचित व्यवहार सबके साथ

सम्बन्ध मधुर बने रहने के लिए व्यवहार में उदारता, धैर्यता और त्याग का भाव होना आवश्यक है। दूसरों के प्रति सम्मान और

हैं, वह कोई मशीन नहीं है, लोहे का पुतला नहीं है, मनुष्य है, उसके पास दिल है। हर दिल को स्नेह, सहानुभूति, प्रेम और आदर की आवश्यकता होती है। अतः अपनों से बड़ों के साथ विनययुक्त व्यवहार, बराबरी वालों से प्रेम और छोटों के प्रति दया तथा सहानुभूति सम्पन्न आपका व्यवहार जादुई असर करता है।

कहते हैं, संकल्पों से सृष्टि रचती तो अभी परमात्मा यही श्रेष्ठ संकल्प दे रहे हैं कि खुद को व दूसरों को आत्मा समझ कर परमात्मा के बच्चे होने नाते आपस में भाई-भाई का सम्बन्ध रखना है। सबके प्रति आत्मिक दृष्टि, भाई-भाई की दृष्टि, ये भावना हमको बहुत सहनशील करने में, एक दूसरे के प्रति व्यवहार को अच्छा बनाने में मदद करती है।

श्रेष्ठ संकल्पों के साथ क्षमा याचना

उन आत्माओं को इमर्ज करो और उनसे क्षमा याचना करो। मैंने जो कुछ भी आपके साथ पूर्व में किया उसकी मैं आपसे क्षमा याचना करता हूँ। उनके लिए अच्छे संकल्प करने हैं, ये सब मेरे गुड फ्रेंड्स हैं। ये मेरी मदद के लिए तैयार हैं। इनके अंदर मेरे लिए प्रेम के फूल उग रहे हैं।

देखने की ही कोशिश करनी चाहिए। किसी को अपना बनाओ तो दिल से बनाओ

जुबान से नहीं। कोई भी सम्बन्ध हो उसमें सत्यता होनी चाहिए। मंसा, वाचा, कर्मणा पवित्रता होनी चाहिए। संकल्पों की एक और महत्वपूर्ण बात कि कमियाँ सबके अंदर होती हैं, लेकिन हम हमेशा उनके गुणों को देखें और शुभ भावना रखें।

स्वयं तथा दूसरों को क्षमा करें

रहमदिल बनकर खुद को और सामने वालों को क्षमा करना है। किसी जन्म का



नेपाल-पोखरा। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान गण्डकी प्रदेश के माननीय सभामुख नेत्रनाथ अधिकारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. परिणीता। साथ है महानगरपालिका मेयर मान बहादुर जि.सो., उपमेयर मंजू देवी गरुड़ तथा अन्य।



कादमा-हरियाणा। त्रिमूर्ति शिवजयंती पर आयोजित 'चली शिव की बारात' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब.कु. उर्मिला, माउंट आबू। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथिगण बाढड़ा विधायक सुखविंदर मांडी, पूर्व विधायक कर्नल रघुवीर सिंह चिल्लर, ब.कु. वसुधा, ग्रामीण विकास मंडल अध्यक्ष राजेन्द्र यादव, व्यापार मंडल अध्यक्ष नरेश गोयल, ब.कु. युगतरन तथा अन्य।



निरसा-झारखंड। शिवजयंती पर शिव संदेश देने हेतु रैली निकालते हुए ब.कु. जया, ब.कु. शक्ति तथा अन्य भाई-बहनें।



सादुलपुर-राज. 83वीं शिवजयंती के अवसर पर आयोजित 'एक शाम भोले के नाम' कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में ब.कु. अनिल कौशिक, ब.कु. चन्द्रकांता, ब.कु. शोभा, गोशाला अध्यक्ष मंगतुराम मोहता, पूर्व जिला शिक्षाधिकारी प्रताप कस्वां, आशादेवी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट के चेयरमैन कौशल पूनिया तथा अन्य।



आगरा-कमलानगर। शिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में शिव को पुष्प अर्पित करते हुए ब.कु. शीला तथा विधायक जगन प्रसाद गर्ग।



पटिया-भुवनेश्वर(ओडिशा)। त्रिमूर्ति शिवजयंती के अवसर पर कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब.कु. लीना, ब.कु. गुलाब, दुर्गा पूजा कमेटी सेक्रेटरी विक्रम राउत तथा अन्य।



समस्तीपुर-बिहार। 83वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब.कु. रानी, अपर जिला सत्र न्यायाधीश संजय कुमार उपाध्याय, दशरथ मिश्र, सहायक सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार राजीव रंजन, डी.के. श्रीवास्तव, सुधा डेयरी सुबोध राम, अपर आयुक्त, वाणिज्य कर विभाग, बिहार सरकार एस.के. वर्मा, पूर्व योजना पदाधिकारी, अरूणाचल प्रदेश, सविता तथा कृष्ण।



किशनगढ़-रेनवाल(राज.)। राजस्थान वैष्णव रत्न महामण्डलेश्वर 108 भरतदास जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. सुमित्रा तथा ब.कु. स्नेह।



नवरंगपुर-ओडिशा। शिवजयंती के अवसर पर कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए रमाकांत नायक, पी.डी.डी. आर.डी.ए., ब.कु. बहनें तथा अन्य।



फतेहपुर-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के अवसर पर एस.एस.पी. कैलाश सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. नीरू। साथ है ब.कु. विमला।



आगरा-सिंदहरा। त्रिमूर्ति शिवजयंती के अवसर पर उपस्थित मेटल हॉस्पिटल डायरेक्टर डॉ. सुधीर जैन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. गीता, ब.कु. मधु तथा अन्य।



मिर्जापुर-उ.प्र.। त्रिमूर्ति शिवजयंती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब.कु. बिन्दु, पंडा समाज के अध्यक्ष पंकज द्विवेदी, मंत्री भानुप्रताप, ब.कु. मालवर, ब.कु. रामजी तथा अन्य।

सत्यम् शिवम् सुंदरम् परमात्मा के सत्य ज्ञान का अनुसरण करें



कामठी-महा। महाशिवरात्रि पर ब्र.कु. प्रेमलता ने कहा कि ज्ञान के अभाव में मनुष्य ईश्वरीय वरदानों से वंचित रहता है। अज्ञान अंधकार के कारण आत्मा विकर्म करने के बाद दुःख, अशान्ति की अनुभूति करती है। ऐसी तनावजन्य जिन्दगी को सुखमय बनाने के लिए नियमित रूप से सत्यम् शिव परमात्मा के सत्य ज्ञान का अनुसरण करना चाहिए। परमपिता परमात्मा शिव के साथ सम्बंध जोड़ने से ही आत्मा मुक्ति व जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकती है। जीवन में असफलता का एकमात्र कारण अज्ञान अंधकार है। उन्होंने कहा कि सत्य ज्ञान व ईश्वर का ध्यान ही आत्मा का

सशक्तिकरण करता है। जितना ज़्यादा मन, बुद्धि को आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण रखेंगे उतना ही जीवन में आने वाली समस्याओं को खेल की तरह पार कर सकते हैं। आत्मजागृति के लिए राजयोग का अभ्यास करना चाहिए। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलित करके की गई। जिसमें सरपंच सौ सुवर्णा ताई साबरे, सौ विमलताई साबले, वैशाली ताई साबले आदि गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। सभी ने झंडे के नीचे खड़े होकर विकारों एवं व्यसनों से मुक्त रहने की प्रतिज्ञा की। कार्यक्रम में गांव-गांव से सैकड़ों लोगों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

परमात्म शक्ति एवं वरदान अनुभूति का अनोखा समारोह

सही ज्ञान और ध्यान से प्राप्त होते परमात्म वरदान

देहरादून। ब्रह्माकुमारीज के राजपुर रोड सेवाकेन्द्र के सभागार में 'परमात्म शक्तियों एवं वरदानों की अनुभूति' विषयक समारोह का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्र.कु. उत्तरा, चंडीगढ़ ने कहा कि घर-गृहस्थी में रहते हुए भी आत्मा कमल पुष्प की भांति निर्मल बन सकती है और परमात्मा द्वारा विश्व के महापरिवर्तन के कार्य में सहयोगी बन सकती है। बलराम मुनि जी, अध्यक्ष, रामतीर्थ मिशन, कुठाल गेट, देहरादून ने 'परोपकाराय पुण्याय' उच्चारते हुए ब्रह्माकुमारीज द्वारा की जा रही मानवता की सेवा की सराहना की। उन्होंने कहा कि मानव अपने संकल्पों को श्रेष्ठ बनाकर श्रेष्ठ संसार के निर्माण में अहम भूमिका निभा सकता है। महावीर सिंह रांगण, अध्यक्ष, गढ़वाल मण्डल विकास निगम लिमिटेड ने मातृ शक्ति और प्राचीन योग शक्ति से पुनः भारत को विश्व गुरु बनाने के प्रयास के लिए ब्रह्माकुमारी बहनों को शुभकामनाएं दीं। राजयोगिनी ब्र.कु. मीना ने परमात्म शक्तियों एवं वरदानों की अनुभूति करने



अतिथियों के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. उत्तरा, ब्र.कु. मीना तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

की विधि बताते हुए कहा कि जब हम स्वयं को आत्मा समझ, आत्माओं के पिता परमात्मा को याद करते हैं, तो उनकी स्मृति से परमात्मा की शक्तियाँ व वरदान स्वतः मिलेंगे, मांगने की जरूरत नहीं पड़ेगी। ब्र.कु. आरती ने कहा कि ईश्वर को सत्य कहा जाता है। परमात्मा और आत्मा का सत्य परिचय पाकर हमारे अंदर सत्यता

की शक्ति आ जाती है। जिससे हम विकारों और व्यसनों से मुक्ति पा सकते हैं। ब्र.कु. मनीषा, चण्डीगढ़ ने जनसमूह को राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास द्वारा परमात्म शक्ति का अनुभव कराया। ब्र.कु. मंजू ने सभी के सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। ब्र.कु. सुशील ने मंच संचालन किया।

स्वर्णिम दुनिया स्थापन करने आते हैं परमात्मा



इन्दौर। महाशिवरात्रि सभी पर्वों में विशेष पर्व है क्योंकि यह स्वयं सर्वशक्तिमान एवं स्वयंभू परमात्मा शिव के इस मनुष्य सृष्टि पर अवतरित होकर मनुष्य आत्माओं को उसके पाप कर्म और दुःखों से मुक्त कर पुनः इस धरती पर स्वर्ग अथवा सतयुग स्थापन

करने का यादगार है। ये विचार इंदौर जोन की मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता ने ओमप्रकाश भाईजी सभागृह में "विष विनाशक है महाशिवरात्रि" कार्यक्रम में व्यक्त किये। ब्र.कु. लीला ने मेडिटेशन करवाया तथा ब्र.कु.

मन की बुराइयों रूपी कांटें, दुर्गुणों रूपी अक के पुष्प एवं आलस्य रूपी विषैली आदतों का त्याग करने का लिया दृढ़ संकल्प।

जयंति ने प्रतिज्ञा कराई। कार्यक्रम में इंदौर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष शंकर लालवानी, गुरु सिंह सभा के अध्यक्ष मनजीत सिंह भाटिया, छत्री बाग आश्रम के महाकालेश्वर राधे-राधे बाबा तथा प्रो. कमल दीक्षित ने शुभ कामना व्यक्त की। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रेमनगर सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. शशि ने किया। इस अवसर पर संस्था सेवा सुरभि के अध्यक्ष ओमप्रकाश नरड़ा, समाज सेवी किशन लाल पाहवा, देवीलाल कंधारी जैन, दिवाकर कॉलेज की प्राचार्या संगीता भारूका, पूर्व जनसंपर्क अधिकारी अशोक मिश्रा, मनोज हार्डिया, रवि गुप्ता, सेल टेक्स के सहायक आयुक्त अभिषेक खरे, ज्वाइंट डायरेक्टर डी.डी. दरवाई, डॉ. महेन्द्र जैन, डॉ. गिरीश टावरी, डॉ. संगीता टावरी, डॉ. शिल्पा देसाई आदि गणमान्य लोग उपस्थित हुए।

सभी धर्मों का केन्द्र बिन्दु परमात्मा शिव



फर्रुखाबाद। ब्रह्माकुमारीज की विभिन्न शाखाओं में महाशिवरात्रि महोत्सव मनाया गया। इस दौरान आचरण की शुद्धता पर जोर दिया। बच्चों ने शंकर-पार्वती के रूप में सुंदर भाव नृत्य किया। बीबीगंज स्थित शाखा पर आयोजित महोत्सव में ब्र.कु. गिरजा ने कहा कि एक परमात्मा ही हैं जो सभी मनुष्यों के परमशिक्षक हैं। यदि स्वयं को परमात्मा का प्यारा बनाना है तो धतूरे के समान बुराइयों को छोड़कर सौभाग्यशाली बनना है। केन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू ने बताया कि 33

करोड़ देवी देवताओं की महिमा गाई गई है, जिनकी रचना स्वयं परमात्मा शिव ने की है। विभिन्न धर्मों में विभिन्न रूपों की पूजा की जाती है, पर उनका केन्द्र बिन्दु परमात्मा शिव के पास ही जाकर समाप्त होता है। परमात्मा शिव देवों के देव महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति हैं। ब्र.कु. सुरेश गौयल ने कहा कि जब मनुष्य इस सृष्टि पर पाप, अत्याचार और बुराइयों से दुःखी होकर परमात्मा को बुलाता है तो वे इस धरा पर अवतरित होकर सभी प्रकार के दुःख से मानव को छुड़ाते हैं। पूर्व सांसद छोटें सिंह यादव ने कहा कि हमें स्वयं के लिए नहीं तो विश्व के लिए परिवर्तन जरूर करना है। जिला होमगार्ड कमांडेंट शैलेंद्र प्रताप सिंह ने अच्छे आचरण पर जोर दिया। इस अवसर पर जिला जेल अधीक्षक विजय विक्रम सिंह तथा चेयरमैन वत्सला अग्रवाल ने भी अपने विचार रखे।

अमरावती-महा। कई बार हमारा जीवन भाग्य बदल देता है। कई बार काफी मेहनत करने पर भी सफलता नहीं मिलती और कभी-कभी बिना मेहनत के सफलता मिल जाती है। यह कौन तय कर सकता है? क्या यह परमात्मा की मर्जी से होता है? अगर यह परमात्मा की मर्जी से होता तो दुनिया ही कुछ अलग होती। कोई दुःख, दुर्घटना, भूकंप, बीमारियाँ, गरीबी न होती। अगर माता-पिता अपने बच्चे का भाग्य लिखते तो सबकुछ परफेक्ट होता। यह भगवान का अंतर नहीं है। अपना कर्म ही अपना भाग्य है। यह मर्म जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्र.कु. शिवानी ने 'मेरा भाग्य कौन लिखता है' विषय पर स्थानीय सेवाकेन्द्र द्वारा शिवाजी शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय के प्रांगण में आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम में व्यक्त किये।

खुशी व शांति दान करें जिसके कर्म सर्वश्रेष्ठ, वही संत आत्मा है। हमें सेवा के साथ संत

जैसा कर्म वैसा बनता भाग्य



जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्र.कु. शिवानी के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सीता, ब्र.कु. इंदिरा तथा अतिथि।

आत्मा बनना है, तभी संत भूमि बनेगी। हमने नेत्रदान, रक्तदान, अंगदान किया, अब खुशीदान, शांतिदान करें। विश्व को इसकी बहुत जरूरत है। वही बोलें और वही करें तो वही एनर्जी बाहर निकलती है, वही कर्म है। जिस एनर्जी को हम बाहर निकालेंगे वही हमें वापस मिलेगी।

क्षमा करना सबसे आसान काम

अगर कोई हमारे साथ गलत करता है तो उसके साथ अच्छा करना चाहिए। हमें सकारात्मक ऊर्जा उसे देनी है। क्षमा करना हमारे लिए सबसे आसान है। हम सेवाधारी हैं, तभी मेरा कर्म मेरा भाग्य बनता है।

गलत काम के गलत परिणाम

गलत काम करेंगे तो परिणाम गलत आएंगे। अपने कर्मों से ही भाग्य लिखा जाता है। अगर मेरा भाग्य बदलना है तो मुझे अपने कर्म अच्छे करने होंगे। हम अपना घर, अपना नाम, अपने मित्र, अपने कपड़े सब बदलना पसंद करते हैं मगर खुद को बदलना पसंद नहीं

करते। हमें अपने संस्कार, अपने कर्म बदलने चाहिए।

सेवा जीने का तरीका

अमरावती संतों की नगरी है। हमारे पूर्वज संत हैं। यहाँ सेवाभाव है, जो सेवा करते हैं वह दुआएँ कमाते हैं। सेवा एक प्रोजेक्ट नहीं है, वह जीवन जीने का तरीका है। मेडिटेशन मतलब अपने कर्मों को चेक करना है। हम सब संत आत्मा बनना चाहते हैं। संत आत्मा वह है जो अपने हर संकल्प, बोल, कर्म को परमात्मा समान श्रेष्ठ बनाते हैं।

कर्म पर ध्यान दें

जो कुछ हम कमाते हैं वह हम ना लेकर आए थे और ना लेकर जायेंगे। मगर जो कर्म लेकर आए थे वही लेकर जायेंगे। हमारी आत्मा के साथ हमारे कर्म, संस्कार जाएंगे। इसलिए अपने संस्कार और अपने कर्म पर ध्यान दें। परमात्मा का ज्ञान ग्रहण करें।

रोजाना सुबह मेडिटेशन करें। आत्मा रूपी बैटरी को संस्कार देकर चार्ज करें। साथ ही उन्होंने सभी को मेडिटेशन करने की विधि भी सिखायी।

इस अवसर पर ब्र.कु. इंदिरा, ब्र.कु.सीता, सांसद आनंदराव अडसूल, साईं जशनलाल, नवनीत राणा, एड.आर.बी. अटल, लप्पीसेठ जाजोदिया, सुधा देशमुख, पदमाकर सोमवंशी, दिलीप पोपट, प्रतिदिन अखबार समूह के संस्थापक संपादक नानक आहूजा, रणजीत बंड, विवेक मराठे, संजय शरण, निर्मल जैन, महेश चिमटे, पूरणसेठ हबलानी, शरद तसरे, पद्मश्री प्रभाकरराव वैद्य, जगदीश गुप्ता, एड.वासुदेव नवलानी, डॉ. संतोषकुमार नवलानी, डॉ. सोनाली देशमुख, सुधा तिवारी, श्रीचंद तेजवानी, कमलताई गवई, डॉ. वसुधा बोंडे, डॉ. तापडिया, बंडू हिवसे, सहित हज़ारों मान्यवर उपस्थित थे। समारोह का संचालन ब्र.कु. अश्विनी, ब्र.कु. सुहिता ने किया।